हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जुलाई, 2014 वर्ष 13 अंक 05

सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 15/-
वार्षिक	₹ 150/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

माहे सियाम (रोज़ों का महीना)

आ गया माहे सियाम
कर लो इस में नेक काम
दिन में हो रोजे से तुम
रात में कर लो क़ियाम
दौर कुरआँ का करो
ढूँढ लो ह़ाफ़िज़ इमाम
सहरी है सुन्नत अहम
खाएं इसको ख़ास व आ़म
वक्ते इफ्तारी जनाब
हो दुआ़ का एहतिमाम
हैं नबी अपने इमाम
उन पे हों लाखों सलाम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

Desining & Editing by : Qamaruzzama- +91 94522 95052, +91 7275527805

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा .... मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी 3

प्यारे नबी की प्यारी बातें .... अमतुल्लाह तस्नीम 4

रमजानुल मुबारक .... डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी 8

जगनायक .... हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी 11

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में ...... हज़रत मौ0 अली मियाँ नदवी रह0 19

इख़्लास और उसके बरकात .... मौ0 सै0 अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0 20

अपने जहाँ से बे खबर .... मौ0 सै0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी 22

निअ़मत व़ बरकत .... हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी 24

तबलीगे नबवी सल्ल0 उसके .... अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0 26

आपके प्रश्नों के उत्तर .... मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी 28

जान हाजिर है हरम (पद्य) .... इदारा 36

उर्दू सीखिए .... इदारा 39

अंतर्राष्ट्रीय समाचार .... डॉ0 मुईद अशरफ नदवी 40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बकरः

अनुवाद– ऐ ईमान वालो फर्ज किया गया तुम पर रोजा जैसे फर्ज किया गया था तुमसे अगलों पर[1] ताकि तुम परहेज़गार हो जाओ[2](183) महीना रमजान का है जिसमें नाजिल हुआ कुर्आन लोगों के वास्ते हिदायत है और रौशन दलीलें राह पाने की, और हक को बातिल से जुदा करने के[3] सो जो कोई पाये तुममें से इस महीने को तो ज़रूर रोज़े रखे उसके[4] और जो कोई बीमार या मुसाफिर हो तो उसको गिनती पूरी करनी चाहिए और दिनों से[5] अल्लाह तुम पर आसानी चाहता है और तुम पर दुश्वारी नहीं चाहता और इस वास्ते कि तुम पूरी करो गिनती और ताकि बड़ाई करो अल्लाह की इस बात पर कि तुम को हिदायत की और ताकि तुम एहसान मानो[6](185)

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. यह आदेश रोजे के मुतअल्लिक है जो अरकाने इस्लाम में दाखिल है और नफ़्स के बन्दों हवा परस्तों (इच्छा लोभियों) को निहायत ही शाक़ (दुशवार) होता है इस लिए ताकीद और एहतिमाम के अल्फाज़ से बयान किया गया है और यह हुक्म हज़रत आदम अलै0 के जमाने से अब तक बराबर जारी रहा है गो दिनों के मुतअय्यन करने में इख्तिलाफ हो और पहले बयान किये उसूल में जो सब्र का हुक्म था रोज़ा उसका एक बड़ा रुक्न है हदीस में रोजे को आधा सब्र फरमाया है–

2. यानी रोजे से नफ्स को उसकी पसंदीदा चीजों से रोकने की आदत पड़ेगी तो फिर उसको उन पसंदीदा चीज़ों से जो शरअ़न हराम हैं रोक सकोगे और रोजे से नफ़्स की काम शक्ति में कमी भी आयेगी तो अब तुम संयमी हो जाओगे बड़ी हिकमत रोजे में यही है कि नफ्स सरकश की इस्लाह हो और शरीअत के अहकाम जो नफ्स को भारी मालूम होते हैं उनका करना आसान हो जाये और तुम संयमी बन जाओ, जानना चाहिए कि यहूद व नसारा पर भी रमजान के रोजे फर्ज हुए थे मगर उन्होंने अपनी ख्वाहिशात के मुवाफिक़ उनमें अपनी राय से फेरबदल किया।

3. हदीस शरीफ में आया है कि सुहफे इब्राहीमी और तौरेत और इंजील सब का नुजूल रमज़ान ही में हुआ है और कुर्आन शरीफ भी रमज़ान की चौबीसवीं रात में लौहे महफूज़ से पहले आसमान पर सब एक साथ भेजा गया फिर थोड़ा थोड़ा करके मुनासिब अहवाल में आप पर नाज़िल होता रहा है, और हर रमज़ान में हज़रत जिब्रील अलै0 नाज़िल हुए कुर्आन आपको दोबारा सुना जाते थे इन सब हालात से रमज़ान के महीने की फजीलत और कुर्आन मजीद के साथ उसकी मुनासबत और खुसूसियत खूब जाहिर हो गयी इसलिए इस

शेष पृष्ठ..........35... पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

रमज़ान की फज़ीलत

—अमतुल्लाह तस्नीम

अगर चाँद नज़र आये–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रमज़ान का चाँद देख कर रोजा रखो और शव्वाल का चाँद देख कर इफ़्तार करो, और अगर बादल वगैरह से चाँद नज़र न आये तो शाबान के तीस दिन पूरे करो, (बुखरी—मुस्लिम) मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अगर चाँद दिखाई न दे तो पूरे तीस रोजे रखो। (मुस्लिम)

रोजे का अल्लाह के यहाँ दर्जा–

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है कि आदमी का हर अमल उसके लिए है और रोज़ा खास मेरे लिए है मैं उसका बदला दूंगा और रोज़ा ढाल है अगर तुममें से कोई रोज़े से हो तो न अशलील बके न असत्य बात बोले, न लड़ाई झगड़ा करे, अगर कोई उसको गाली भी दे या झगड़ा करने पर तैयार हो जाये तो कह दे मैं रोजे से हूँ और क़सम है उसकी जिसके कब्जे में मुहम्मद सल्ल0 की जान है कि रोजेदार के मुँह की बू (महक) अल्लाह को मुश्क से ज़ियादा पसंद है और फरमाया कि रोजे दार को दो खुशियाँ हासिल होती हैं एक इफ़्तार के समय जब कि वह रोज़ा खोलता है, दूसरी खुशी कियामत के दिन होगी जब वह अपने रब से मिलेगा और अपने रोजे का बदला देखेगा

(बुख़ारी—मुस्लिम)

एक रिवायत में है कि खाना पीना छोड़ना और अभिलाषा का छोड़ना मेरी खातिर था तो रोजा मेरे लिए हुआ और मैं ही उसका बदला दूंगा और एक नेकी का बदला दस गुना है।

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि आदमी को हर अमल के बदले में दस नेकियां सात सौ गुना तक दी जायेंगी लेकिन अल्लाह तआ़ला फरमाता है कि रोजा तो खास मेरे लिए है मैं ही उसका बदला दूंगा इसलिए कि उसका खाना पीना छोड़ना और अभिलाषा का छोड़ना मेरी खातिर था और रोजेदार को दो खुशियां नसीब होती हैं एक इफ़्तार के समय जब कि वह रोज़ा खोलता है और दूसरी खुशी अपने रब से मुलाक़ात के समय होगी और रोजेदार के मुँह की बू अल्लाह को मुश्क से ज़ियादा पसंद है।

जन्नत के दरवाज़े–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख्स अल्लाह के रास्ते में एक जोड़ा (यानी जोड़े—जोड़े दो पैसे, दो कपड़े या दो घोड़े, यानी हर वस्तु जोड़ा जोड़ा) देगा, वह जन्नत के हर दरवाज़े से बुलाया जायेगा कहा जायेगा ऐ अल्लाह

के बन्दे यह बेहतर है, तो नमाज़ी को नमाज़ के दरवाजे से बुलाया जायेगा, गाज़ी को जिहाद के दरवाज़े से बुलाया जायेगा, रोज़ेदार को "रय्यान" नामी दरवाज़े से और सदक़ा व खैरात करने वालों को सदक़े के दरवाज़े से बुलाया जायेगा, हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने पूछा या रसूलुल्लाह मेरे माँ बाप आप पर फिदा, जो शख़्स इन दरवाजों से बुलाया जायेगा उसका नुकसान तो नहीं है परन्तु मैं यह पूछता हूं कि कोई ऐसा भी है जो इन सब दरवाज़ों से बुलाया जाये? आप सल्ल0 ने अर्ज किया हाँ मुझे उम्मीद है तुम उनमें से हो। (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत सहल इब्ने सअद रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया जन्नत में एक दरवाज़ा है जिसका नाम "रय्यान" है कियामत के दिन उस दरवाज़े से रोजेदार के सिवा कोई दाखिल न होगा और कहा जायेगा कि रोजेदार कहाँ हैं तो रोजेदार खड़े होंगे और उस दरवाजे से दाखिल हो जायेंगे, उनके दाखिल होते ही दरवाज़ा बंद हो जायेगा फिर कोई दाखिल न हो सकेगा। (बुखारी–मुस्लिम)

अल्लाह की राह में निकलने की हालत में रोज़ा–

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो व्यक्ति अल्लाह की राह में जिहाद में हो तो अल्लाह तआला उस दिन के रोज़े की वजह से उसके चेहरे को सत्तर साल के लिए आग से दूर रखेगा (बुखारी–मुस्लिम)

रोज़े की रूह–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो व्यक्ति रमज़ान में सवाब और ईमान की खातिर रोजे रखेगा तो उसके तमाम अगले गुनाह माफ कर दिये जायेंगे (बुख़ारी–मुस्लिम)

रमज़ान की पहली रात–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रमजानुल मुबारक की पहली रात को जन्नत के दरवाजे खोल दिये जाते हैं और दोज़ख के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं और शयातीन बाँध दिये जाते हैं (बुखारी–मुस्लिम)

रमज़ान में फैय्याजी व दानशीलता की फज़ीलत–

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का नियम–

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबसे जियादा सखी (दानवीर) थे और रमज़ान में और जियादा दानशीलता करते थे, हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम रमज़ान में हर रात आप सल्ल0 से मुलाक़ात करते तो आप सल्ल0 तेज़ हवा से जियादा सखावत फरमाते (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्ल0 रमजान के आखिरी दस रातों में शबबेदारी (जागना) फरमाते थे और अपने घर वालों को भी जगाते और खुद कमर कस कर तैयार हो जाते थे

(बुखारी–मुस्लिम)

सहरी का बयान–

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सहरी खाया करो, सहरी में बरकत होती है (बुखारी–मुस्लिम)

हजरत ज़ैद बिन साबित रज़ि0 से रिवायत है कि हमने रसूल सल्ल0 के साथ सहरी खायी फिर हम फज्र की नमाज़ के लिए चले, किसी ने पूछा कि सहरी और नमाज़ के मध्य कितना अंतराल था, कहा पचास आयतों के पढ़ने के बकद्र फर्क था

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्ल0 के दो मुअज्जिन थे एक हज़रत बिलाल रज़ि0 और दूसरे अब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मकतूम रज़ि0 आप सल्ल0 ने फरमाया बिलाल रज़ि0 रात को अज़ान देते हैं (आप सल्ल0 के काल में रमजानुल मुबारक में एक अज़ान सुब्हे सादिक से पहले होती थी, जो इस बात की निशानी थी कि सुब्ह करीब है, सहरी खा पी लो, दूसरी सुब्हे सादिक के बाद होती थी) तो उस समय तक खाओ पियो जब तक अब्दुल्लाह इब्ने मकतूम रज़ि0 अज़ान न दे दें। रावी ने कहा कि इन दोनों में इतना अंतर होता था कि एक उतरे और दूसरा चढ़े (बुख़ारी–मुस्लिम)

हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हमारे रोज़ों को अहले किताब के रोज़ों पर जो फजीलत हासिल है वह सहरी की वजह से है।

(मुस्लिम)

इफ़्तार का बयानः

इफ़्तार में जल्दी करना–

हज़रत सह्ल बिन सअ़द रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया लोग उस समय तक भलाई में रहेंगे जब तक इफ़्तारी में जल्दी करेंगे (मुस्लिम)

हज़रत अबी अतीय्या रज़ि0 से रिवायत है कि मैं और मसरूक़ हज़रत आइशा रज़ि0 की खिदमत में आये और अर्ज किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के असहाब में दो ऐसे हैं कि नेकी करने में कोई कुसूर नहीं करते उनमें से एक मगरिब की नमाज़ पढ़ने में और इफ़्तार में जल्दी करते हैं और दूसरे देर करते हैं, हज़रत आइशा रज़ि0 ने फरमाया कौन जल्दी करता है, अर्ज किया अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि0, हज़रत आइशा रज़ि0 ने फरमाया रसूलुल्लाह सल्ल0 भी ऐसा ही करते थे।

(मुस्लिम)

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया अल्लाह तआ़ला को वह बन्दे बहुत महबूब हैं जो इफ़्तार में जल्दी करते हैं (तिर्मिजी)

इफ़्तार का समय–

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब रात इधर आये और दिन उधर जाये तो रोजे के इफ़्तार का समय आ गया।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू इब्राहीम अब्दुल्लाह बिन अबू औफा से रिवायत है कि हम रसूल

सल्ल0 के साथ किसी सफर में जा रहे थे और आप रोजे से थे, जब सूरज डूब गया तो आपने किसी से फरमाया कि उतरो और सत्तू तैयार कर दो, उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह अगर आप शाम करलें तो मुनासिब है आप सल्ल0 ने फरमाया उतरो और हमारे लिए सत्तू तैयार करो उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह अभी दिन बाक़ी है, आपने फरमाया उतरो और हमारे लिए सत्तू तैयार करो, बस वह उतर पड़े और सत्तू घोल कर हज़रत की खिदमत में पेश किया, हुजूर सल्ल0 ने नोश फरमाया, फिर फरमाया जब तुम देखो कि रात इधर से आ रही है तो रोज़ा इफ़्तार करलो, और आपने अपने मुबारक हाथों से मश्रिक़ (पूरब) की ओर इशारा किया (बुख़ारी—मुस्लिम)

खजूर से इफ़्तार–

हजरत सलमान बिन आमिर ज़ब्बी सहाबी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया खजूर से इफ़्तार करो अगर खजूर न मिले तो पानी से रोज़ा खोलो, पानी पाक करने वाला है (अबूदाऊद—तिर्मिजी)

खजूर और छोहारा न हो तो पानी–

हजरत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 नमाज़ से पहले इफ़्तार कर लेते थे और ताजे ख़जूर से इफ़्तार फरमाते थे, अगर ताजे खजूर न मिलते तो सूखे खजूर यानी छोहारे से रोजा खोलते थे और अगर यह भी न होते थे तो कुछ घूँट पानी से रोज़ा इफ़्तार फरमाते थे।

(अबूदाऊद—तिर्मिजी)

रोजेदार को जबान की हिफाजत का आदेश–

हजरत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया रोजेदार को चाहिए कि रोजे के दिन बेहयायी का काम न करे, न शोर करे, और अगर कोई उसको गाली दे या लड़ना चाहे तो कह दे कि मैं रोज़ेदार हूँ (बुखारी—मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्ल0 ने फरमाया जिस व्यक्ति ने झूठ बोलना और झूठी बात पर अमल करना न छोड़ा तो उसके खाना पानी छोड़ने की अल्लाह को कोई ज़रूरत नहीं (बुखारी)

रोजा खोलवाने की फज़ीलत–

हजरत जैद बिन खालिद जुहनी रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया जिसने किसी रोजेदार को रोजा इफ़्तार कराया तो उसको उस रोजेदार के रोजे के बराबर सवाब मिलेगा और रोजेदार के सवाब में कोई कमी न होगी। (तिर्मिजी)

हज़रत उम्मे अ़म्मारा अंसारिया रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 एक रोज मेरे घर तशरीफ लाये, मैंने आप सल्ल0 की खिदमत में खाना पेश किया, आप सल्ल0 ने फरमाया तुम भी खाओ, मैंने कहा मैं रोजे से हूँ, आप सल्ल0 ने फरमाया जब रोजेदार के पास खाना खाया जाता है तो फरिश्ते रोजेदार के लिए दुआ करते रहते हैं जब तक खाने वाले खाने से फारिग न हों या यूं फरमाया कि जब तक वह सेर (आसूदा) न हों (तिर्मिजी)

शेष पृष्ठ ......23...... पर

रमज़ानुल मुबारक

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

रमज़ान का चाँद दिखते ही इस्लामी समाज में एक हलचल मच जाती है, सब एक दूसरे को मुबारकबाद देने लगते हैं, सब खुश हो कर अपनी हैसियत के मुताबिक़ सहरी के इन्तिज़ाम में लग जाते हैं, छोटे—छोटे बच्चे भी अपनी माओं से कहते हैं अम्मी! हम भी रोज़ा रखेंगे माँ कहती हैं हाँ बेटे तुम तो बड़ा वाला रोज़ा रखोगे। इशा की अजान हुई आज सब लोग बड़ी ख़ुशी से मस्जिद पहुँच रहे हैं, तरावीह की नमाज़ जो पढ़नी है, जहाँ हो सका पहले ही से हाफिज़ से बात कर ली गई, कहीं अपने गाँव या मुहल्ले ही के कोई हाफ़िज़ साहिब तरावीह पढ़ाने को तैयार हो गये कहीं दूसरी जगह से हाफिज़ साहिब लाए गये, जहाँ हाफ़िज़ का बन्दोबस्त नहीं हो सका नमाज़ी लोग सू—रए—फ़ील से अन्नास तक की सूरतों से बीस रकअ़त तरावीह पूरी करेंगे, कहीं हाफिज़ साहब सवा पारा रोज़ सुनाएंगे, कुछ हाफ़िज़ डेढ़ पारा, कुछ दो पारे, कुछ तो पाँच पारे रोज़ सुनाएगे, सुनने वाले भी हर तरह के हैं कुछ तो पाँच पारे शौक से सुनते हैं मगर अकसर सवा पारा पसन्द करते हैं, अल्लाह जिसे जो तौफीक़ दे बड़े खुश नसीब हैं वह लोग जो बड़े एहतिमाम से रोज़ाना बीस रकअ़त तरावीह पढ़ते हैं और तरावीह में पूरा कुर्आन सुन लेते हैं।

सहरी के वक्त कैसी धूम रहती है, छोटे बच्चे भी जग जाते हैं और बड़ों के साथ सहरी में हिस्सा बटाते हैं। जो लोग कुर्आने शरीफ़ पढ़े हैं कोई पाव पारा कोई आधा पारा कोई एक पारा रोजाना तिलावत करता है, बहुत से लोग, दुरूद शरीफ़ सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह और अल्लाहु अकबर की कई कई तस्बीहें पढ़ते हैं, दुआएं भी खूब मांगते हैं यह सब रमजानुल मुबारक की बरकतें हैं।

दिन में सब अपने अपने कामों में लग जाते हैं, कोई नौकरी पर जाता है, किसी का अपना कारोबार है, दुकान है या कोई कारीगरी का काम है कोई अपने खेत देखता है तो कोई मजदूरी जो जहां रहता है वहां रमजान की बरकतें दिखती हैं। लड़ाई, झगड़े, गुस्सा पर काबू है साथ के मुस्लिम व गैर मुस्लिम साफ़ देखते हैं कि रोज़ेदार में रोज़ के मुकाबले में अच्छा खासा बदलाव है, किसी को किसी पर जलना, किसी की चुग़ली, किसी की पीठ पीछे बुराई करना, किसी का बेजा साथ देना यह सारे ऐब अब उससे कोसों दूर हैं गाली गलोज से पूरी घृणा है, यह हाल देख कर उसका गैर मुस्लिम दोस्त उस पर रश्क करता है, यह हाल एक दिन का नहीं पूरा महीना इसी तरह गुज़रेगा। शाम के करीब इफ़्तारी की तैयारी है हर

शख्स अपनी हैसियत के मुताबिक़ तैयारी करता है मर्द आम तौर से इफ़्तारी ले कर मस्जिद पहुँच जाते हैं इफ़्तारी का इन्तिज़ार देखते ही बनता है, इधर मुअज़्ज़िन ने अल्लाहु अक्बर की आवाज़ सुनाई उधर शरबत या पानी का घूँट मुँह में पहुँचा, दिन के रोज़े और इफ़्तार के इन्तिजार के बाद चने की घुघनियों की लज्जत को ऊँचे से ऊँचा पकवान नहीं पहुँच सकता।

अजीब बातः— एक रमज़ान में मैं दुबई में मौजूद था वहां एक गुजराती हिन्दू ताजिर रहता था, मैंने देखा पूरे घर के लोग अपने गैर मुस्लिम नौकरों के साथ घर में तरह तरह के खाने और फल फ्रूट एक जगह चटाई पर रख कर बैठे अज़ान का इन्तिजार कर रहे हैं। मैंने पूछा क्या आप लोग रोजा रखते हैं? जवाब मिला नहीं, मैंने कहा फिर यह इफ़्तारीका एहतिमाम क्यों? जवाब मिला अज़ान के इन्तिजार के बाद हर खाने में स्वाद बढ़ जाता है।

मस्जिदों में इफ़्तार के बाद मग़रिब की जमाअत होती है, औरतें अपने घरों में नमाज़ अदा करती हैं। रमज़ान में पाँचों वक्त मस्जिद भरी मिलती है यह भी रमजान की बरकत है कि लोग बड़े एहतिमाम से नमाज़ जमाअत से अदा करते हैं।

हर रोज़ेदार अपनी हैसियत के मुताबिक़ अपने भाइयों की नीज़ दूसरे इन्सानों की हर तरह की खास तौर से ग़रीबों की माली मदद करता है, मालदार लोग अपने माल की ज़कात भी रमज़ान में निकालते हैं इसलिए कि रमज़ान में हर नेकी का बदला सत्तर गुना बढ़ा कर मिलता है। माल की ज़कात ढाई फीसद निकाल कर ग़रीब मुसलमानों को दी जाती है। जकात सिर्फ मुसलमान का हक़ है इसलिए गैर मुस्लिम ग़रीबों की दूसरे माल से मदद की जाती है उनको ज़कात की रकम नहीं दी जाती।

आखिरी अशरे में अल्लाह जिसे तौफ़ीक़ देता है मस्जिद में एतिकाफ़ करके जहां वह सुन्नत अदा करते हैं वहीं बड़ा सवाब पा कर अल्लाह का कुर्ब (निकटता) हासिल करते हैं। रमजान के आखिरी दहे में एक रात लैलतुल क़द्र आती है जो अपनी बरकतों के लिहाज़ से हजार महीनों से भी बेहतर है बहुत से रोज़ेदार जो दिन में मेहनत का काम नहीं करते आखिरी दहे की सभी रातों में जाग कर अल्लाह को याद करते हैं, नमाज़ें पढ़ते हैं तिलावत करते हैं, ताकि लैलतुल क़द्र की इबादत का सवाब मिल जाए, रिवायतों में आता है कि लैलतुल क़द्र रमज़ान के आखिरी दहे की ताक रातों में किसी एक रात में होती है इसलिए बहुत से रोजेदार ताक़ रातों में जाग कर इबादत करते हैं।

अहम बातः— जो लोग दिन भर कामों मे लगे रहते हैं वह रात को नहीं जाग पाते उनको चाहिए कि वह जमाअत की नमाज न छोड़ें इस तरह उनकी मग़रिब और

इशा दो नमाज़ें हर रात में होंगी तो लैलतुल क़द्र की रात में भी इन नमाज़ों का भारी सवाब मिल जाएगा।

हर माल दार पर ईद के रोज़ अपनी तरफ से और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ से फ़ित्रा वाजिब होता है, फ़ित्रे में एक किलो 600 ग्राम गेहूँ या उसकी कीमत देना होती है बहुत से भाई रमज़ान में फ़ित्रा निकाल कर गरीबों को पहुँचा कर सत्तर गुना सवाब हासिल कर लेते हैं।

29 या 30 रमज़ान को ईद का चाँद दिखता है तो पूरे इस्लामी मुआशरे में धूम मच जाती है, एक दूसरे को मुबारकबाद देते हैं रात में ठीक से नींद नहीं आती सुब्ह सवेरे उठ कर नमाज़ अदा करते हैं फिर नहा धो कर अच्छे कपड़े पहनते हैं, मिस्वाक करते हैं, खुशबू लगाते हैं, अगर फ़ित्रा देना रह गया है तो फ़ित्रा अदा करते हैं कुछ मीठा खा कर ईद की नमाज़ के लिए निकलते हैं, रास्ते में आहिस्ता आहिस्ता अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर, लाइलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्द पढ़ते जाते हैं। ईद की नमाज़ पढ़ कर एक दूसरे को मुबारक बाद देते हैं और अजीज़ों करीबों से मुलाकतें करते हैं बाहम दावतें खाते खिलाते हैं।

अल्लाह तआला आपको रमज़ान और ईद दोनों मुबारक करे आमीन।

इन सारी बातों के साथ अपने समाज में यह भी देखने को मिलता है कि हमारी बहुत सी माएं बहनें रोज़ा नहीं रहती और बहुत से भाई बिला किसी उज़्र के रोज़ा नहीं रखते बल्कि उससे आगे बढ़ कर नमाज़ भी नहीं पढ़ते ऐसे में हमारे रोज़ेदार भाईयों का फर्ज बनता है कि वह ऐसे भाईयों से मिलें और बड़ी हमदर्दी से उनको समझाऐं कि कौन है जिसे मरना नहीं, फिर क़ब्र की लम्बी ज़िन्दगी, फिर कियामत आएगी, हश्र के मैदान में सब जमा होंगे बड़ा सख़्त दिन होगा, हिसाब व किताब होगा कोई हमेशा के लिए जन्नत पाएगा तो कोई हमेशा के लिए जहन्नम में डाल दिया जाएगा, यह सब बातें कहानी नहीं सच्ची ख़बरें हैं, अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़रिए हम को बतलाई हैं, जो लोग इन बातों को नहीं मानते वह अपना नतीजा खुद जानें उनका इस्लाम से कोई तअल्लुक़ नहीं, हम सब तो इन सब बातों को मानते हैं, फ़िर सोचें अगर हम नमाज़ न पढ़ेंगे, रोज़ा न रखेंगे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताए रास्ते पर न चलेंगे तो जब हमारी आँखें बन्द होंगी तो हमारा क्या होगा, इसी प्रकार हमारी रोज़ेदार बहनें भटकी बहनों को समझाएं तो इन्शा अल्लाह अच्छा नतीजा निकलेगा, तौफीक़ अल्लाह के इख़्तियार में है।

❖❖❖

प्रिय पाठकों से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के खरीदार बना कर सहयोग दें।

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

तबूक की मुहिम सन् 9 हिजरी—

रजब सन् 8 हिजरी को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह ख़बर मिली की रूमी फौजें अरब की उत्तरी सरहदों पर हमले की तैयारी कर रही हैं और अरबों में से उनके हम मज़हब ईसाई क़बाएल लख़ाम, जुज़ाम, आंमिला, गस्सान वग़ैरह उनके साथ हैं, रूमी बादशाह हिरक़्ल ने जंग की ज़रूरतों का लिहाज़ करते हुए अपने सिपाहियों की एक साल की खूराक़ का इन्तिज़ाम भी कर लिया है और फौज को साल भर की तनख़्वाहें भी दे दी हैं और उनका हरावल दस्ता "बलक़ा" तक आ गया है[1] वह उस नाकामी का बदला लेना चाहते थे जो "मूता" के मक़ाम पर क़ैसरे रूम और उसकी फ़ौज को हुई थी। गरज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तीस हज़ार फौज के साथ मदीना से तबूक के लिए रवाना हुए, मौसम सख्त गर्म था और मदीने के खजूरों के बाग़ात के फल लाने का भी जमाना था, मदीने के बाशिन्दों का आमतौर पर रोज़ी रोटी का सहारा इसी पर था उनमें गुर्बत भी आम थी लिहाज़ा उनके लिए सख़्त मरहला था कि इस सबको छोड़ कर चले जाएं लेकिन ईमान की ताकत ग़ालिब थी, लिहाज़ा वह सब तैयार हो गए। लश्करे इस्लाम के पास माल की कमी थी, लिहाज़ा जंग की जरूरतों के लिए चंदा किया गया, जिससे जो बन पाया दिया। हज़रत उमर के पास जो कुछ था उसका आधा ले आए और उसका आधा घर वालों की ज़रूरत के लिए छोड़ आए, हज़रत अबू बक्र से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दरयाफ़्त किया कि घर में क्या छोड़ कर आये हो, उन्होंने कहा "सिर्फ अल्लाह व रसूल का नाम" बहरहाल इन सख़्त हालात में मुसलमान रूमियों के मुकाबले के लिए निकले। लश्करे इस्लाम में सवारियों की बड़ी क़िल्लत थी। 18 शख़्सों के लिए एक ऊँट मुकर्रर था, खाने पीने का सामान न होने से अक्सर जगहों पर दरख़्तों के पत्ते खाने पड़े, जिससे होंठ सूज गए, पानी बाज़ जगह मिला ही नहीं। ऊँटों को जो सवारियों के लिए पहले ही से कम थे ज़बह करके उनकी अतड़ियों का पानी पिया करते थे। राह में वह इबरतनाक (उपदेशपूर्ण) मक़ामात थे, जिनका ज़िक्र कुर्आन मजीद में आया है यानी क़ौमे समूद के मकानात जो पहाड़ों में तराश कर बनाए गए थे। चूंकि उस मकाम पर अज़ाबे इलाही नाज़िल हो चुका था, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म दिया कि कोई शख़्स यहां कियाम न करे, न पानी पिये और न किसी काम में लाए। अलगरज़ सब्र व मुसतक़िल मिज़ाजी से सारी तकलीफ़ों को बर्दाश्त करते हुए तबूक तक पहुँच गए।

1. जादुल मआद 3/527

तबूक पहुँच कर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बीस दिन तक कियाम किया "ऐला" के हाकिम यूहन्ना बिन रूबा ने जो सरहदी इलाक़ों के हुक्काम में से था, हाज़िरे ख़िदमत हो कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुलह कर ली और जिज़या देना मन्जूर किया[1] जरबा और अज़रह के ईसाई भी हाज़िर हुए और जिज़्ये पर रज़ामन्दी ज़ाहिर की, रूमियों पर मुसलमानों की इस पेशक़दमी का यह असर हुआ कि उन्होंने इसका जवाब किसी जवाबी हमले और पेशक़दमी फ़ौजी नक़्ल व हरकत और सरगर्मी से नहीं दिया, बल्कि उन्होंने अरब पर हमला आवर होने का इरादा ही तर्क कर दिया और एक तरह की पसपाई और ख़ामोशी इख़्तियार कर ली और मुसलमानों की ताक़त का जितना अन्दाज़ा उन्हें उस वक़्त हुआ उससे पहले कभी न हुआ था, अलबत्ता दौमतुल जुन्दल के हाकिम अक़ीदर बिन अब्दुल मलिक अल किन्दी नसरानी की तरफ से जो रूमी फ़ौज़ों का पुश्तपनाह था, हमले की ज़रूर इत्तिला मिली, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी सरकोबी के लिए हज़रत खालिद बिन वलीद को पाँच सौ सवारों के साथ रवाना फरमाया। हज़रत खालिद ने उसको गिरफ्तार करके आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में पेश किया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका खून मआफ कर दिया और जिज़्ये पर उससे मुसालिहत कर ली और उसको आज़ाद कर दिया[2] और आप पूरे एक माह मदीने से बाहर रह कर मदीना तशरीफ लाए।

सच्चाई और कुसूर के मान लेने की बरकत–

तबूक़ का यह वाक़िया बाकाएदा किसी जंग के बग़ैर अंजाम पाया, कई तरह के हालात व खुसूसियात पर मुशतमिल (सम्मिलित) रहा। एक तो यह कि बड़ी सख़्त गरमी के मौसम में पेश आया जिसमें शहर के बाग़ात के अन्दर के ख़ुशगवार मौसम और घरों के आराम से निकल कर खुश्क और गर्म रेगिस्तानों से गुज़रना था और मदीना मुनव्वरा के बाग़ात के फलने का वक़्त भी यही था। एक तरफ उनकी देख भाल और सब छोड़ कर लम्बे फासले की मुहिम पर जाना बड़े ईमान की बात थी, वह लोग जो अपने को ज़ाहिर में मुसलमान पेश करते थे और अपने कुफ्र को छुपाते थे, उनका निफाक अल्लाह तआला ने खास तौर पर उस वक़्त खुले तौर पर ज़ाहिर फरमा दिया, कि उन्होंने तरह तरह के बहानों के साथ जाने से अपने को बचा लिया, चूंनाचें कुर्आन मजीद में इस मौके के सिलसिले में जब आयतें नाज़िल हुईं तो उनकी खुली हुई मज़म्मत की गई। उनके साथ साथ चन्द अफराद ऐसे भी थे जो मुनाफिक तो न थे, लेकिन बाज़ रुकावटों की वजह से बिला किसी बुरे इरादे के जाने से रह गए थे, उनका इम्तिहान दूसरे तरीके से हुआ। यानी शहर के अन्दर उनके बाई काट का हुक्म दिया गया और वह लोग पूरे 40 रोज़ अपने साथियों, अज़ीज़ों वगैरह से रब्त व

तअल्लुक और औरतों से महरूम (वंचित) रहे और इस दरमियान में उनको बताया भी नहीं गया की वह बाईकाट कब तक के लिए है। चूनांचे वह ज़हनी परेशानी में भी रहे।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा को उनके ईमान व यक़ीन को मज़बूत करने के लिए उनको इस तरह के इम्तिहान से गुज़ारते थे, उनसे गुज़र जाने वाला उस खालिस सोने की तरह निखर जाता जो कि भट्टी में से गुज़र कर खालिस बनता है। इस का वाक़िया हज़रत कअब बिन मालिक की ही ज़बान से सुनिएः—

"हज़रत अब्दुल्लाह बिन कअब बिन मालिक रज़ि0 से रिवायत है कि (जब कअब बिन मालिक नाबीना हो गए तो यही बेटे उनके साथ चलते थे) कि मैंने कअब बिन मालिक से सुना है कि वह ग़ज़्व—ए—तबूक में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पीछे रह जाने का किस्सा यूँ बयान करते थे कि मैं किसी ग़ज़्वे में कभी भी ग़ैर हाज़िर नहीं रहा सिवाए ग़ज़्व—ए—तबूक और ग़ज़्व—ए—बदर के। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ज़्व—ए—बदर में शिरकत न करने के सिलसिले में किसी पर नाराज़गी नहीं फरमाई थी, बात यह थी कि आप सल्ल0 और मुसलमान कुरैश के शाम से आने वाले काफिले (की रुकावट करने) के इरादे से निकले थे (वह काफिला तो आपके पहुंचने से पहले आगे निकल गया लेकिन इस बहाने) अल्लाह तआला ने उनको और उनके असल दुश्मनों को बग़ैर किसी वक्त मुकर्ररह के जमा कर दिया। (इस लिए उसमें कई मुसलमान शिरकत न कर सके क्योंकि उस मौके पर बाकाएदा जंग का मंसूबा न था) अलबत्ता मैं रसूलुल्लाह सल्ल0 के साथ अक़बा स्थित मिना में हज के वक़्त शरीक हुआ था जब कि हमने इस्लाम पर अहद किया था और मैं अकबा की उस शिरकत पर बदर की शिरकत को तरजीह नहीं देता अगरचे बदर लोंगों में ज़्यादा मशहूर है।"

मेरा किस्सा यह है कि मैं जब ग़ज़्व—ए—तबूक़ में रसूलुल्लाह सल्ल0 से पीछे रहा उस वक्त मुझमें कूव्वत भी थी और फुर्सत भी। खुदा की क़सम मेरे पास इकट्ठा दो ऊँट कभी भी नहीं हुए थे, लेकिन उस ग़ज़्वे में मेरे पास एक छोड़ दो दो सवारियाँ थीं और रसूलुल्लाह सल्ल0 जब किसी ग़ज़्वे का इरादा करते थे तो किसी और सिम्त के मुतअल्लिक दरयाफ़्त फरमाते थे, लोग समझते थे कि आपको उसी की तरफ जाना है, अचानक आप सल्ल0 दूसरी तरफ का रुख़ फरमा लेते लेकिन (उस मौके पर अपनी इख़्तियार की हुई सिम्त) को ज़ाहिर कर दिया (कि तबूक जाना है) क्योंकि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उस ग़ज़्वे की तैयारी सख़्त गर्मी में की, दूर का सफर था, मौसम सख़्त और खुश्क, दुश्मनों की बड़ी तादाद का मुकाबला, इसलिए उस मुहिम का इज़हार कर दिया था, और उनको उस सिम्त की ख़बर दे दी थी ताकि पूरे तौर पर तैयारी कर लें, उस वक्त मुसलमानों की तादाद बहुत हो चुकी थी और उनकी

कोई लिस्ट न थी, अगर आदमी छुपना चाहता तो छुप जाता और किसी को गुमान भी न होता, जब तक की उसके बारे में अल्लाह की तरफ से "वही" न नाज़िल होती।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह ग़ज़वा उस वक्त किया जब खजूर पक गए थे और साया बड़ा अच्छा मालूम होता था, और मुझे उसमें बड़ा मज़ा आता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और मुसलमानों ने सामाने सफर शुरु कर दिया मैं हर रोज़ सुबह इसी इरादे से आता कि मैं भी आप सल्ल0 के साथ जाने की तैयारी कर लूँ लेकिन यूंही पलट जाता और कोई फैसला न कर पाता था, मैं अपने दिल में कहता था कि जल्दी क्या है, जब भी इरादा करूंगा चला जाऊंगा क्योंकि मुझमें इसकी इस्तिताअत है लेकिन बराबर मेरा यही हाल रहा, यहां तक की सफर की हमा हमीं और सरगर्मी पूरी हो गई और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और मुसलमान आखिरकार रवाना हो गए और उस वक्त तक मैं कोई यक़ीनी फ़ैसला नहीं कर सका। सुबह को आता और कुछ इन्तिज़ाम किये बग़ैर पलट जाता। रोज़ाना यही कैफ़ियत रहती। यहां तक कि हुजूर सल्ल0 और मुजाहीदीन बहुत आगे तक गए और मेरे लिए जिहाद में शिरकत कर सकने का वक्त निकल गया। फिर भी मैंने इरादा किया कि अब भी चला जाऊं और आप सल्ल0 के जाने के बाद जब मैं घर से बाहर निकलता था तो मुझे रंज होता था कि इस मामले में मेरे शरीक हाल वही लोग थे जो मुनाफ़िक़ थे या माजूर और मुझे रसूलुल्लाह सल्ल0 ने सफ़र के बीच याद नहीं फरमाया। तबूक पहुंच कर आप सल्ल0 ने लोगों से दरयाफ़्त फ़रमाया कि कअब बिन मालिक को क्या हुआ। बनी सलमा के एक आदमी ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनका अपनी खुशनुमा चादर और झुक झुक कर उसके किनारे के देखने ने इतनी फुरसत ही कहां दी कि वह हमारे साथ आते। मआज़ बिन जबल रज़ि0 ने कहा कि "बुरी बात तुमने कही, अल्लाह की कसम या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! उनमें सिवाए भलाई के हम कुछ नहीं पाते फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खामोश हो गए और आप सल्ल0 इसी हाल में थे कि एक सफेद पोश आदमी गर्द उड़ाता हुआ आ रहा था, आप सल्ल0 ने फ़रमाया अबू ख़सीमा! तो वह अबू ख़सीमा ही थे। यह वही थे जिन्होंने एक साअ़ खजूरों का सदक़ा किया तो उन पर मुनाफिकीन ने तंज़ (व्यंग) किया था।

हज़रत कअब कहते हैं कि जब मुझे खबर पहुंची कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तबूक से पलटने वाले हैं तो मुझे फ़िक्र शुरु हो गयी और मैं अपने दिल ही दिल में तरकीबें सोचने लगा और मैं असलन यह सोचता था कि मैं कल आप सल्ल0 की नाराज़गी से कैसे बचूंगा। मैं अपने घर वालों में हर राए वाले से इस बारे

में मदद चाहता, जब यह खबर मिली कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ ले आए तो मेरा सब सोचा हुआ ज़हन से निकल गया और मैंने समझ लिया की झूठी बात बता कर नजात न पाऊंगा। लिहाज़ा सच बोलने की ठान ली।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सुबह सुबह तशरीफ लाए और आप सल्ल0 की आदते शरीफ़ा ये थी कि जब किसी सफर से पलटते थे तो पहले मस्जिद में आते थे उसमें दो रकअतें पढ़ कर फिर लोगों के पास बैठते थे। जब आप सल्ल0 फारिग़ हुए तो पीछे रह जाने वाले आ आकर आप सल्ल0 से उज़्र करने लगे और क़समें खाने लगे वह कुछ ऊपर 80 आदमी थे। आप सल्ल0 ने उनके ज़ाहिरी दावे कुबूल किये, उनसे बैअत ली उनके लिए बखशिश की दुआ की और उनके दिली भेदों को अल्लाह के सुपुर्द किया। फिर मैं आया। जब मैंने रसूलुल्लाह सल्ल0 को सलाम किया तो आप सल्ल0 गुस्से के अंदाज़ में मुस्कुराए और फ़रमाया आओ। मैं आया आप सल्ल0 के सामने बैठ गया। आपने फरमाया किस सबब से तुम शरीक नहीं हो सके, क्या तुम्हारे पास सवारी न थी? मैंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! अल्लाह की कसम अगर मैं किसी दुन्या वाले के पास बैठा होता तो मैं उसकी नाराज़गी से उज़्र करके निकल जाता, इसलिए कि मुझमें उम्दा तरीके से बात करने का सलीक़ा है लेकिन मैं समझता हूँ कि अगर आज मैं आप सल्ल0 से झूठ बात कह दूंगा तो आप सल्ल0 राज़ी हो जायेंगे मगर करीब है कि अल्लाह तआला आप सल्ल0 को मुझसे नाराज़ कर दें और अगर मैं आप सल्ल0 से सच्ची बात कह दूं तो आप सल्ल0 नाराज़ तो ज़रूर होंगे लेकिन मैं इसमें अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ला के इनआम की उम्मीद रखता हूँ। सच्ची बात यह है कि मेरे लिए कोई उज़्र नहीं था। वल्लाह मैं कभी इतना फारिगुलबाल नहीं था, जितना कि उस मौक़े पर था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इन्होंने सच्ची बात कह दी। जाओ यहां तक कि अल्लाह तआला तुम्हारे हक़ में फ़ैसला करे।

मैं उठा और मेरे साथ ही बनी सलमा के कुछ लोग भी उठ कर आए और कहने लगे कि हमको मालूम नहीं कि इससे पहले तुमने कोई गुनाह किया हो, तुम (इस मौके पर कैसे) आजिज़ हो गए और कोई उज़्र पेश कर देते तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तुम्हारे लिए बखशिश चाहना तुम्हारे गुनाह की मआफी के लिए काफी हो जाता, इसी तरह वह बराबर मलामत करते रहे, यहां तक कि मैंने इरादा किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ पलट जाऊँ, फिर मैंने उनसे कहा "क्या मेरी तरह कोई और भी है। बोले हाँ दो आदमी हैं, उन्होंने भी वही कहा जो तुमने कहा और उनसे भी वही कहा गया जो तुमसे कहा गया। मैंने कहा वह कौन हैं? एक तो मिरार

बिन रबीआ़ हैं और दूसरे हिलाल बिन उमय्या हैं और जब मैंने उन दोनों का ज़िक्र सुना तो घर आया क्योंकि उन्होंने ऐसे दो नेक आदमियों का ज़िक्र किया जो बदर में शरीक थे, वह दोनों मेरे लिए अच्छा नमूना थे।

अब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हुक्म फरमाया कि हम तीनों से कोई बात न करे तो लोग किनाराकश हो गए और ऐसा रुख बदला गोया कभी जान पहचान थी ही नहीं। यहां तक कि मेरा दिल तंग हो गया और ज़मीन वह ज़मीन ही मालूम नहीं होती थी जिसको मैं पहचानता था, इस हालत में हम पर 50 रातें गुज़र गईं, मेरे दोनों साथी अपने घरों में थक कर बैठ गए और रोते रहे लेकिन मैं जवान आदमी था, निकलता था, नमाज़ में शरीक होता था, बाज़ारों में फिरता था, लेकिन कोई बात न करता था। मैं मस्जिद में आता था, नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अपनी मजलिस में तशरीफ रखते, मैं सलाम करता और उनको देख कर दिल में कहता कि आप सल्ल0 के होंठों को जवाब देने में हरकत हुई फिर मैं आप सल्ल0 के करीब नमाज़ पढ़ता और छुपी नज़र से आप सल्ल0 को देखता, जब नमाज़ की तरफ मुतवज्जेह होता तो आप सल्ल0 मुझको देखते और जब मैं आप सल्ल0 की तरफ मुतवज्जेह होता तो आप सल्ल0 मुझसे बेरुखी करते।

मुसलमानों की बेरुखी को मुद्दत हो गई थी, एक दिन मैं अबू कतादा की तरफ गया वह मेरे चचाज़ाद भाई होते थे और मुझे बहुत महबूब थे। मैं उनके बाग़ की दीवार फांद कर अन्दर पहुंचा और उनको सलाम किया, वल्लाह उन्होंने मेरे सलाम का जवाब तक न दिया। मैंने कहा: ऐ अबू कतादा! मैं तुमसे अल्लाह का वास्ता दे कर पूछता हूँ क्या तुम नहीं जानते हो कि मुझे अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत है, वह खामोश रहे, मैंने दुबारा कसम दी मगर वह खामोश रहे फिर मैंने उनको कसम दी, उन्होंने कहा अल्लाह और रसूल सल्ल0 जियादा जानते हैं उस वक्त मेरी दोनों आंखों से आंसू बहने लगे और मैं चला आया।

मैं मदीने के बाज़ार में फिर रहा था कि एक नबती शाम के नबतियों में से तिजारत का ग़ल्ला लेकर आया, कहता था कि कोई शख़्स मुझे कअब बिन मालिक का पता दे सकता है? लोग मेरी तरफ इशारा करने लगे वह मेरे पास आया, और गस्सान के बादशाह का ख़त दिया। मैंने उसको पढ़ा उसमें लिखा था "मुझे ख़बर मिली है कि तुम्हारे आक़ा तुमसे नाराज़ हैं, तुम ज़िल्लत व नाक़दरी की जगह रहने पर मजबूर नहीं हो तुम हमारे पास आओ हम तुम्हारी ग़मख़्वारी करेंगे"। जब मैं उसको पढ़ चुका तो मेरे रंज की कोई हद न रही। मैंने कहा कि यह और बड़ी मुसीबत है और मैंने उस ख़त को तंदूर में झोंक दिया।

इसी हालत पर 40 रातें गुज़रीं। "वही" अरसे से नहीं आयी थी। नागाह (अचानक) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का एक कासिद मेरे पास आया और कहाः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुमको हुक्म देते हैं कि अपनी बीवी से अगल हो जाओ और उनके क़रीब न जाओ, इसी तरह मेरे दोनों साथियों को हुक्म पहुंचा। मैंने अपनी बीवी से कहा कि तुम अपने मैके चली जाओ जब तक की अल्लाह तआला इस मामले का फैसला न करे। हिलाल बिन उमय्या की बीवी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और कहा "या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इब्ने उमय्या बूढ़े हैं और कोई खादिम नहीं। क्या आप सल्ल0 नापसन्द करते हैं कि मैं उनकी खिदमत करूँ", आप सल्ल0 ने फरमाया नहीं, लेकिन वह तुमसे क़रीब न हों, उन्होंने कहा खुदा की क़सम उनमें कोई हिस व हरकत नहीं, जब से यह किस्सा हुआ है वह बराबर रोते ही रहते हैं।

मुझसे मेरे घर वालों ने कहा तुम भी आप सल्ल0 से अपनी बीवी के बारे में इजाज़त तलब करो, जैसे हिलाल बिन उमय्या की बीवी ने अपने शौहर की ख़िदमत की इजाज़त ली है मैंने कहा मैं इजाज़त न माँगूँगा, मैं नहीं जानता कि आप सल्ल0 क्या जवाब देंगे। इसलिए कि मैं जवान आदमी हूँ।

इसी हालत में हमने मजीद दस रातें गुज़ारी, वह पूरी पचास रातें हो गईं मैंने पचासवीं रात की सुबह को अपने घर की छत पर नमाज़ पढ़ी, मैं इसी हालत में बैठा था, जिसका नक्शा अल्लाह ने खींचा है, मुझ पर मेरा दिल तंग हो गया था और ज़मीन फैलाव के बावजूद मुझ पर तंग हो गई थी, कि मैंने कोहे सिला से एक पुकार सुनी, कोई बुलन्द आवाज़ से कह रहा था "ऐ कअब बिन मालिक तुमको बशारत हो" यह सुनते ही मैं सज्दे में गिर पड़ा और मैंने समझ लिया कि मसर्रत की घड़ी आ गई। सुबह की नमाज़ पढ़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह अज्ज़ व जल्ल की तरफ से हमारी तौबा की कुबूलियत का ऐलान किया। लोग हमको बशारत देने लगे और कुछ मेरे दोनों साथियों की तरफ बशारत देने के लिए चले गये एक घोड़सवार दौड़ता हुआ आया और कबील–ए–असलम का एक आदमी पैदल आया और पहाड़ पर चढ़ा उसकी आवाज़ घोड़े से भी जियादा तेज़ थी, जब वह मेरे पास आया और मुझको बशारत सुनाने लगा तो "खुशी" में मैंने अपने दोनो कपड़े पहना दिये, वल्लाह मैं उस वक्त उन्हीं दो कपड़ों का मालिक था, फिर मैंने दो कपड़े वक्ती तौर पर लिए और उनको पहन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाने के इरादे से चला, लोग मुझसे जूक़ दर जूक़ मिलते थे और तौबा की मुबारकबाद देते थे और कहते थे तौबा की कुबुलियत मुबारक हो। यहां तक की मैं मस्जिद में आया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बैठे थे और

लोग आप सल्ल0 के गिर्द जमा थे, तलहा बिन उबैदुल्लाह मुझको देख कर खड़े हो गये और बढ़ कर मुझसे मुसाफा किया और मुबारकबाद दी, वल्लाह मुहाजिरीनों में उनके सिवा कोई नहीं खड़ा हुआ मैं तलहा का यह ऐहसान नहीं भूल सकता जब मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम किया तो आप सल्ल0 ने फरमाया (और आप सल्ल0 का चेहर–ए–मुबारक खुशी से दमक रहा था) "ज़िन्दगी का मुबारकतरीन दिन मुबारक हो"। मैंने कहा यह आपकी तरफ से है या अल्लाह तआला की तरफ से है, फरमाया नहीं बल्कि यह अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की तरफ से है।

जब आप सल्ल0 खुश होते थे तो आप का चेहर–ए–मुबारक ऐसा चमकता था, गोया चांद का एक टुकड़ा है, हम इस कैफियत को पहचानते थे। मैं जब आप सल्ल0 के पास बैठा तो मैंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं इस खुशी में अपना माल सदके के तौर पर अल्लाह और उसके रसूल सल्ल0 के लिए छोड़ता हूँ, आप सल्ल0 ने फरमाया कि कुछ माल अपने लिए रोक लो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। मैंने कहा ख़ैबर का हिस्सा मैंने अपने लिए छोड़ा है और मैंने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह तआला ने मुझको सच्चाई के सबब नजात दी है। अब मेरी तौबा का नतीजा यह होना चाहिए कि जब तक ज़िन्दा रहूँ सच ही बोलूँ और अल्लाह की कसम जब से मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सच सच कह दिया आज के दिन तक झूठ बोलने का कभी इरादा नहीं किया और मेरे इल्म में सच बोलने में किसी पर अल्लाह तआला ने ऐसा फ़ज़्ल नहीं किया जैसा मुझ पर फ़रमाया है और मैं उम्मीद करता हूँ जब तक मैं ज़िन्दा रहूँगा अल्लाह तआला मेरी हिफाज़त करेगा।

❖❖❖

इस्लाम ईमान और एहसान

इस्लाम वह है कि गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नही और गवाही दो कि हज़रत मुहम्मद सल्ल0 अल्लाह के रसूल हैं, और नमाज़ काइम करो, माल की ज़कात दो, रमजान के रोजे रखो, और इस्तिताअत होने पर हज अदा करो।

ईमान यह है कि अल्लाह पर ईमान लाओ, उसके फ़िरिश्तों पर ईमान लाओ, उसकी किताबों पर ईमान लाओ, उसके रसूलों पर ईमान लाओ, कियामत के दिन पर ईमान लाओ, और तक़दीर पर ईमान लाओ कि अच्छी हो या बुरी वह अल्लाह ही कि तरफ से है।

एहसान वह है कि अल्लाह तआला कि इबादत इस तरह करो कि जैसे तुम उसको देख रहे हो, अगर यह कैफीयत न हो सके तो यह सोचो कि वह तुम्हें देख रहा है। यह बातें मुस्लिम शरीफ की एक हदीस से ली गई हैं जिसको हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 ने अपने वालिद हजरत उमर रज़ि0 से रिवायत किया है। यहां पूरी हदीस नहीं नक़्ल की गई है। ❑❑

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक दृष्टि में

पैदाइश से बालिग़ होने तक आधारभूत इस्लामी आस्थाएं

—हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

मुसलमान घरानों में नमाज़ का आयोजन और उनके साधनों का उचित प्रबन्ध—

लगभग हर मुसलमान के घर में जा नमाज़ या नमाज़ पढ़ने के लिए चटाई या धुली हुई और पाक चादरें होती हैं। घर की महिलायें (जो कुछ हद तक मर्दों से ज़्यादा धार्मिक और धर्म कर्म का पालन करने वाली होती हैं) घर में ही नमाज़ पढ़ती हैं। इसके लिए चौकी, तख़्त या जानमाज़ों का प्रबन्ध रहता है। पुरुष प्राय मुहल्ले की मस्जिद में नमाज़ अदा करते हैं परन्तु बीमारी अथवा किसी अस्मर्थता वश घर में नमाज़ पढ़ने के लिए भी प्रयोजन रहता है। बहुधा बाहर से मेहमान भी आते रहते हैं, और समय असमय उनके लिए नमाज़ का प्रयोजन करना पड़ता है। घर में छोटे बड़े सब किबला (काबा शरीफ़ की दिशा) से अवगत होते हैं। प्रायः वुज़ू के लिए (विशेषकर पवित्रता एवं स्वच्छता का बहुत अधिक ध्यान रखने वाले घरों में) एक अलग से लोटा होता है जो शौचालय आदि में नहीं प्रयोग किया जाता।

जब लोटे[1] की बात आ गई तो इसका भी उल्लेख कर देना आवश्यक है कि बहुत दिनों से मुसलमानों में टोंटीदार लोटे का रिवाज चला आ रहा है जिसके प्रति यह विचार किया जाता है कि इसमें शुद्धता एवं पवित्रता अधिक होती है और पानी कम नष्ट होता है। वह आकार में भी कुछ बड़ा होता है और इससे सुविधापूर्वक वुज़ू एवं तहारत (पवित्रता) का काम किया जा सकता है।

इस्लामी समाज में महिलाओं का सम्मान तथा बच्चों की शिक्षा दीक्षा में उनका योगदान—

मुसलमान घरों में हर युग में नारी को आदर एवं सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है। उसको मिल्कीयत, खरीद व फ़रोख़्त और अनेक वैधानिक अधिकार प्राप्त हैं। छोटी आयु में बच्चों की शिक्षा—दीक्षा सामान्यता उन्हीं की देख—रेख में होती है। भद्र घरानों में और पुराने खानदानों में कोई न कोई पढ़ी लिखी महिला या बड़ी बूढ़ी बीबी बच्चों तथा बच्चियों को कुर्आन मजीद और प्रारम्भिक और आवश्यक धर्म सम्बन्धी शिक्षा देती थीं, और मुहल्ले टोले तथा पास पड़ोस के बच्चे, बच्चियां उनके पास पढ़ने आतीं थीं, यह एक छोटा मोटा मकतब अथवा मदरसा का रूप धारण कर लेता था। अब भी कहीं कहीं इसका रिवाज है। शिक्षा के साथ वह बच्चियों को सीने पिरोने, कशीदा कारी खाना पकाने और गृह सम्बन्धी शिक्षा देती थीं।

---

1. माननीय पं0 जवाहर लाल नेहरू ने इस लोटे का अपनी आत्म कथा में उल्लेख करके और यह कह कर कि मुझे इसके अतिरिक्त हिन्दू तथा मुसलमानों के रहन सहन में कोई अन्तर विदित नहीं होता, कि मुसलमानों के यहाँ लोटा टोंटीदार होता है और गैर मुस्लिमों के यहाँ बिना टोंटीदार, इस लोटे को बदनामी की हद तक प्रसिद्ध कर दिया।

इख़्लास और उसके बरकात व फ़ायदे

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी —मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

आमाल (कर्म) नीयतों पर निर्भर होते हैं–

हज़रत उमर इब्ने खत्ताब रज़ि0 फरमाते हैं कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को फरमाते हुए सुना कि कर्म नीयतों पर निर्भर होते हैं।

एक अहम (महत्वपूर्ण) हदीस में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तमाम आमाल की निर्भरता नीयतों पर है और नीयतों की श्रेणियाँ भी हैं, जिस श्रेणी की नीयत होगी उसी प्रकार उस पर सवाब मिलेगा और उसी पर उस कर्म का परिणाम निकलेगा, मसलन एक किसान खेती करता है पहले खेत जोतता है, फिर दाना डालता है, फिर बंद कर देता है और जब बंद कर देता है तो किसी को नहीं मालूम होता कि क्या बोया है, सिर्फ बोने वाला ही जानता है, यह जो दिल है, मानो यह ज़मीन है, आप इस पर मेहनत करते हैं, फिर दाना डालते हैं, दाना क्या डाला यह कोई नहीं जानता सिवाये आपके, आप जानते हैं कि दिल में नीयत क्या है? अब अगर यह दाना अच्छा है तो अच्छा पेड़ निकलेगा, और बुरा है तो बुरा पेड़ निकलेगा, लेकिन जब पेड़ उगता है तो पहचाना नहीं जाता, लेकिन अल्लाह वाले माहिरीन पहचान लेते हैं कि मुआमला गड़बड़ है, अलामत तो ग़लत हो रही है, और अगर अच्छा निकलता है तो भी पहचान जाते हैं कि यह सही निकल रहा है, आम लोग इसको नहीं जानते, फिर जब वह पेड़ बढ़ कर बड़ा और मज़बूत हो जाता है तब हर आमजन जान लेते हैं कि दाना ही खराब था, उम्मीद आम की थी निकला नीम, हम समझ रहे थे कि हमने कोई फल वाला पेड़ बोया है, लेकिन निकला बबूल, लेकिन बहुत दिनों बाद जब पेड़ बड़ा होगा तब मालूम होगा, ऐसे ही दिल की ज़मीन में जो दाना डाला जायेगा जब वह निकलेगा सामने आयेगा और दुन्या में उसका परिणाम जाहिर होगा, तो हर आदमी उसको पहचाने गा, कभी मालूम हुआ किसी को बहुत शोहरत (प्रसिद्ध) हो रही है, सारे लोग बड़ा समझ रहे हैं लेकिन उसके बाद मालूम हुआ कि सब खत्म हो गया है क्योंकि वह पेड़ ही बेकार था और कभी किसी के बारे में मालूम हुआ कि कुछ नहीं है लेकिन चंद दिनों के बाद मालूम हुआ ज़रा सा जो बोया था बड़ा रंग लाया, लोगों ने बड़ा फायदा उठाया, और किसी को मालूम भी न हुआ कि किसने और कब बोया, और कौन सा दाना बोया था जिस से पूरी क़ौम फायदा उठा रही है इसी लिए हमें हमेशा अपनी नीयतों पर ध्यान देते रहना चाहिए कि हम नीयत क्या कर रहे हैं जब हमने उसको दुरुस्त कर लिया तो परेशान नहीं होना चाहिए।

आज हाल यह है कि खाना खाने मे नीयत ही नहीं होती अगर दुआ पढ़ी भी तो बे मन, लेकिन यह नीयत कि यह अल्लाह की नेअ़मत है, अल्लाह ने दी है उसके वास्ते से इबादत के लायक़ हो जायेंगे, अल्लाह ने ही खाने का हुक्म दिया है वह खाने से खुश होता है छोड़ने से नहीं, हम उसी के हुक्म की पाबंदी कर रहे हैं अगर कोई कई दिन तक खाना न खाये तो गुनहगार होगा, इसलिए खाना खाना चाहिए, और अल्लाह अच्छा दे तो अच्छा खाओ मना किसने किया है? लेकिन सुन्नत के मुताबिक़ खाओ, स्वास्थ अच्छा रहेगा, हलक़ (नकटी) तक खा लोगे तो स्वास्थ खराब होगा, अगर खाना देखते ही टूट पड़े और नीयत करना और दुआ करना भी भूल गये और कई आदमियों का खाना खा गये, अब डकारें आ रही हैं, परेशान हैं, जब सोच समझ कर, नीयत करके, एहतियात से खायेगा, तो पेट भी खराब नहीं होगा।

बाहर का बिगाड़ अन्दर के बिगाड़ का परिणाम है-

दिल के अन्दर के मुआमले का संबन्ध अल्लाह से है जब वह ठीक हो गया तो बाहर के मुआमले से कोई परेशानी नहीं चूंकि बाहर के मुआमले का तअल्लुक़ दूसरों से है, अन्दर ठीक तो बाहर ठीक, यानी जो बीज दिल में बोएंगे वही काटेंगे भी, अगर आपने इज्जत, शोहरत, माल चाहा तो अल्लाह माल दे देगा लेकिन आखिरत में कुछ नहीं मिलेगा हदीस शरीफ में यह भी आता है कि कियामत के दिन तीन आदमी लाये जायेंगे, एक जो शहीद हुआ होगा, दूसरा मालदार जिसने अल्लाह की राह में खूब खर्च किया होगा, और तीसरा वह आलिम जिसने लोगों को समझाया, बताया होगा, जब वह तीनों अल्लाह के सामने पेश किये जायेंगे और अल्लाह उनको बतायेगा कि यह यह नेमतें तुम को दी थीं तो वह सब कहेंगे हां आपने हम को दी थीं हमने बहुत काम किया आलिम कहेगा कि हमने तक़रीरें की वअ़ज कहा तो अल्लाह कहेगा कि तूने इस लिए कहा कि तुझे अल्लामा कहा जाये बड़ा वाइज़, बड़ा मुकर्रिर कहा जाये, तो यह दुन्या में कहा जा चुका, अब यहाँ कुछ नहीं मिलेगा।

ऐसे ही शहीद से कहा जायेगा कि तुम अल्लाह के रास्ते में इसलिए शहीद हुए कि तुमको बहादुर कहा जाये, बड़ा बहादुर आदमी था, तो सबने कह दिया, जो नीयत थी मिल गया, तीसरा वह आदमी है जो अल्लाह के रास्ते में खर्च करेगा उससे भी कहा जायेगा कि तुमने इसलिए खर्च किया कि कहा जाये कि बड़े सखी हैं बड़े खर्च करने वाले हैं इनके दर पर कोई चला जाये तो खाली हाथ वापस नहीं आता, सबको देते हैं, आप इसलिए देते थे कि आप की प्रसिद्ध हो, सो हो चुकी इसलिए यह मुआमला बड़ा ख़तरनाक है, इसमें आदमी को बड़ा चौकन्ना रहने की ज़रूरत है कम से कम यह बात होनी चाहिए कि सारे दीनी काम चाहे पढ़ना पढ़ाना हो कुर्आन मजीद की तिलावत हो, या हदीस का पढ़ना वगैरह, और अगर नीयत

शेष पृष्ठ ......35... पर

–देवनागरी लिपि में उर्दू

अपने जहाँ से बे खबर

–मौ0 बिलाल अब्दुल हयी हसनी नदवी

दुन्या के मौजूदा हालात ने हर फर्द (व्यक्ति) को कुछ सोचने पर मजबूर कर दिया है। मीड़िया ने ज़मीन की तनाबें (ज़मीन को समेट दिया है) खींच दी हैं। सात समन्दर पार अगर सूई गिरती है तो उसकी आहट एक झोंपड़ी में भी सुनाई देती है, उसका नतीजा यह है कि हर शख़्स मुतफक्किर (चिन्तित) बना हुआ है, इसमें कोई शुब्हा नहीं कि इन्सानियत की फिक्र एक मुसलमान की अहम जिम्मेदारी है, इसलिए कि उसके पास इन्सानियत के उसूल (नियम) हैं दुन्यावी जिन्दगी गुजारने का तरीका है, वह अगर इस अहम अमानत (धरोहर) को दूसरों में नहीं बाँटेगा तो एक तरफ वह खुद आहिस्ता आहिस्ता महरूमी (अभाग्य) का शिकार होगा और दूसरी तरफ दगाबाज़ों की तरफ तरक्की चली जायेगी, अस्हाबे इल्म व फिक्र (बुद्धि जीवियों) की यह जिम्मेदारी है कि वह रहनुमाई का फरीज़ा अंजाम दें लेकिन इस वक्त मसअला यह है कि हर शख़्स अपने जहाँ से बे खबर हो कर वहां की किस्मत के फैसले कर रहा है, जहाँ उसकी पहुंच नहीं, होटलों में, कारखानों में, कचहरियों में यहाँ तक की अस्पतालों में हर जगह यही बातचीत का मौजुअ़ नज़र आता है, इसका नतीजा यह है कि हम जो कर सकते हैं उससे बिल्कुल बे परवाह हो गये हैं और जाहिर है जब मशीन का कोई पुरजा अपनी जगह पर हरकत न करे मगर उसको ठीक न करके दूसरे पुरज़ों पर ध्यान दिया जाये तो ऐसी मशीन कभी नहीं चल सकती, आज हमारा हाल यह है कि अपनी जिम्मेदारी का हमको जरा भी एहसास नहीं होता और कोई सन्जीदा और ठोस मेहनत करने के लिए हम तैयार नहीं होते और हम अपनी जगह पर रह करके इस जौहर को बरबाद करने में लगे हुए हैं।

अगर एक फर्द है तो उसको सबसे पहले अपना जाइजा लेने की ज़रूरत है कि उसके अन्दर क्या क्या खामियां हैं, उसकी जात से समाज को क्या नुक्सान पहुँच रहा है और वह खुद अपना किस तरह नुक्सान कर रहा है, अगर वह किसी एक छोटे से घर का जिम्मेदार है तो उसको अपने घर का मुहासबा (लेखा परीक्षा) करना चाहिए कि उसके बच्चों का क्या हाल है, वह क्या तालीम हासिल कर रहे हैं और उसके क्या नताइज़ खुलने वाले हैं, उसकी नौजवान बच्चियाँ किस रास्ते पर जा रही हैं, मीड़िया के जरिए उसके घर में किस तरह के असरात पड़ रहे हैं, समाज की बुराईयाँ खुद उसके घर में किस तरह दाखिल हो कर उसको तबाह कर रही हैं?

उससे आगे बढ़ कर वह अगर किसी स्कूल का टीचर है तो उसे अपने तलबा (छात्रों) पर गौर करने की ज़रूरत है कि उनका क्या जहन बन रहा है, उनसे मुसतक्बिल (भविष्य) में किस तरह की तवक्कुआत वाबस्ता की जा सकती हैं, वह मुल्क व मिल्लत का रौशन मुस्तक्बिल हैं या उसके तारीक दौर की एक अलामत बनने वाले हैं, अगर वह किसी इदारे का जिम्मेदार है तो उसको आगे सोचने की ज़रूरत है, उस इदारे के कारकुनान की जेहनीयत क्या है और उनके जरीये से तर्बीयती निजाम किस तरह परवान चढ़ रहा है, उसके अन्दर उरूज व ज़वाल (उत्थान व पतन) की कैसी दास्तानें पोशीदा हैं, यहाँ तक कि अगर वह एक दूकानदार है तो उसको सोचने की ज़रूरत है कि इन्सानियत की फलाह के लिए वह कैसा किरदार निबाह रहा है, उसके ग्राहकों के साथ उसके तअ़ल्लुक़ात की नौईयत क्या है, खरीद व फरोख़्त के कामयाब इस्लामी उसूलों से वह वाकिफ है या ना वाकिफ, फिर उसपर किस हद तक वह अमल पैरा है, अगर वह किसी तहरीक से वाबस्ता है और उसका जिम्मेदार है तो उसे सब से पहले अपने दिल को टटोलने की ज़रूरत है कि उसकी तहरीक का मक्सद क्या है, अल्लाह की रज़ा के लिए वह अल्लाह के बन्दों को जोड़ना चाहता है और अल्लाह की बन्दगी में उन को लाना चाहता है या उसके पेशे नज़र अपनी इज्जत और अपना फाएदा है, फिर अपने मातहतों के साथ उसका बरताव आमिराना और तहक्कुमाना (हाकिमों जैसा) है या वह उसमें रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस–वए–हसना की रौशनी में ज़िन्दगी गुज़ार रहा है, तो उसे देखने की ज़रूरत है कि उसकी नज़र किसी आने वाले की जेब पर है या उसके धड़कते कांपते इन्सान पर?

दुन्या के मौजूदा हालात ने हर फर्द को अपने जहाँ से बे खबर कर दिया है, जहाँ उसका कोई, इख़्तियार नहीं, जहाँ उसके बस में कुछ नहीं वहाँ के बारे में बे ज़रूरत घण्टों की बातचीत और जहाँ वह सब कुछ कर सकता है और कुछ करके वह आहिस्ता आहिस्ता आलमी मंज़र नामे में तब्दील हो सकता है, उसके बारे में ज़रा भी एहसास नहीं होता।

यह सूरते हाल जवाल (पतन) की गम्माज है, जिसमें हालात को बदलने की ज़रूरत है, जो हमारे दाए–रए–इख़्तियार में है उसमें ज़बरदस्त मेहनत के बाद ही इख़्तियार का दाइरा वसीअ़ हो सकता है और वहाँ पहुँच सकते हैं जहाँ के बारे में शायद हमने सोचा भी न हो।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी ....

हजरत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि रसूल सल्ल0 सअ़द बिन उबादा रज़ि0 के घर तशरीफ ले गये, उन्होंने रोटी और ज़ैतून का तेल पेश किया आप सल्ल0 ने नोश फरमाया फिर यह दुआ दी अनुवादः तुम्हारे घर रोजेदार इफ़्तार करें, तुम्हारा खाना नेक लोग खायें और फरिश्ते तुम्हारे लिए दुआ करें। (अबूदाऊद)

❖❖❖

निअ़मत व बरकत (पुरस्कारों) के दिन

—मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी

रमजान का महीना साल के महीनों में बहुत ही अहम और खुसूसियात (विशेषताओं) वाला महीना है। उसकी सबसे बड़ी खुसूसियत कुर्आन मजीद में "उसमें कुर्आन उतारा गया" बताई गई है कि रमजान ही में अल्लाह तआला का कलाम इस आलमें इन्सानी (मानव जगत) की तरफ भेजा गया जिसको अल्लाह तआला ने तमाम लोगों के लिए रहबरी और हिदायत (सीधा और सच्चा रास्ता बताने) की खुली निशानी और हक्क व बातिल (सत्य तथा असत्य) में फर्क (अंतर) करने वाला बताया।

(अलबकरा: 185)

कुर्आन मजीद की सबसे बड़ी महत्वता इस संसार के लोगों को अल्लाह के बताये हुए रास्तों पर जमाये रखने की है इस धरती का बाकी रहना उस पर बसने वालों से सम्बन्धित है और इन्सानों का बाकी रहना उसके उस जीवन प्रणाली से सम्बन्धित है जो उसके और इस धरती के पैदा करने वाले ने नियत किया है और अपने कलाम "कुर्आन मजीद" द्वारा उसे बता दिया है और फरमाया इसमें लोगों के लिए मार्ग दर्शन के स्पष्ट तर्क हैं और यह (कुर्आन सत्य तथा असत्य में अंतर का) निर्णायक है।

अतः अल्लाह का यह कलाम जिस महीने में उतारा गया वह महीना भलाईयों वाला महीना बन गया अतएव इस महीने में इबादात (उपासनाओं) से विशेष सम्बन्ध हो जाता है और अपने पालनहार की ओर निरंतर ध्यान रहने लगता है किसी और महीने में यह विशेषता नहीं पाई जाती इस महीने में इबादत का मूल्य दूसरे महीनों के समक्ष बहुत बढ़ जाता है और इबादात में बहुत जी लगने लगता है। हर भले काम का बदला दूसरे महीनों के मुकाबले में सत्तर गुना हो जाता है रोजेदार का सारा वक्त इबादत के प्रकाश से प्रकाशित हो जाता है एक तरफ सारे जाइज कारोबार तो दूसरी तरफ मकबूल इबादात दोनों जारी रहते हैं अन्दर से हर समय अल्लाह की याद और बाहर से जाइज कामों की इजाजत ऐसी दसा बनाते हैं कि इसमें पाप करने की कल्पना भी नहीं हो सकती।

हदीस शरीफ में रोजे को ढाल बताया गया है, यह ढ़ाल पापों के आक्रमणों से बचाती है फरमाया "रोज़ा ढाल है"।

वास्तव में रोज़ा मुसलमानों के लिए ऐसा वातावरण बनाता है कि उसमें पाप करना सरल नहीं रहता प्रत्यक्ष है जब वह खाना पीना छोड़ देता है काम इच्छाओं से दूर रहता है, झूठ, कपट किसी की पीठ पीछे बुराई करने जैसे बुरे कामों से बचता है तो पापों के सारे रास्ते उसके लिए बन्द हो जाते हैं। उस पर यह भी

किया गया कि रमजान में बड़े बड़े शैतान बन्दी बना दिये जाते हैं इस प्रकार एक ओर रोजेदार के नफ़्स की बुरी चाहतों पर रोक लग जाती है तो दूसरी ओर शैतान जो नफ़्स को बुराई पर उभारता है कैद कर दिया जाता है फिर रमजान को कुर्आन के प्रकाश से प्रकाशित किया गया है दिन मे कुर्आन पाक की (तिलावत) रात में कुर्आन पाक नमाज़ों के पश्चात कुर्आन पाठ नमाज़ों में कुर्आन पाठ अर्थात कुर्आन पाक का वातावरण, फिर उस पर रमजान के आखरी अशरे (दहे) में कद्र की रात (लैलतुल कद्र) जो अपने अज्र व सवाब (उसमें किये गये भले कामों के प्रतिदान) के लिहाज से हजार महीनों से बढ़ कर है। इस रात में फरिश्ते रात भर अल्लाह की रहमतें ले कर उतरते रहते हैं यहाँ तक की सुब्हे सादिक (भोर का समय) जाहिर हो जाती है।

रमजान का महीना मुसलमानों के लिए वार्षिक आध्यात्मिक (रूहानी) प्रशिक्षण कैम्प (तरबीयती कैम्प) की हैसियत रखता है जिसमें उससे उन्तीस, तीस दिनों तक रियाज़त (तपस्या) कराई जाती है ताकि साल के ग्यारह महीनों में जो अन्तरमन की गलत चाहतों तथा भूल चूक से जो कुप्रभाव पड़ा हो वह दूर हो जाये और मन पवित्र हो जाये और जीवन अध्यात्मिक प्रकाश से प्रकाशित हो कर संयम की ऐसी शक्ति प्राप्त करले जो वर्ष के ग्यारह महीनों तक आने वाले कुप्रभावों का मुकाबला कर सके। रमजान में जहाँ कुर्आन अवतरित हुआ वहीं इस मास में दो महत्वपूर्ण घटनायें भी घटी हैं। पहली घटना बद्र का युद्ध है जिसको कुर्आने मजीद में "यौमुल फुरकान" (निर्णय का दिन) कहा गया है जिससे इस्लाम की भव्य विजय का आरम्भ हुआ दूसरी घटना मक्के की विजय (फतेह मक्का) है जिससे इस्लाम के महत्वपूर्ण शत्रुओं का दमन हो गया और इस्लाम का झण्डा पूरी श्रेष्ठता के साथ लहराने लगा। यह वह दो घटनयें हैं जिनसे इस्लाम की श्रेष्ठता का आरम्भ हुआ अल्लाह तआला ने इन महान घटनाओं को इसी पवित्र मास में रखा रमजान का महीना बड़ा ही शान्दार तथा उपासना एवं तपस्या का महीना है।

इसके रोजे (उपवास) अल्लाह तआला के निकट बड़ा महत्व रखते हैं और उनका बदला अल्लाह तआला की तरफ से विशेष नियुक्त किया गया है एक कुदसी हदीस में अल्लाह तआला फरमाता है कि "रोजा खास तौर पर मेरे लिए है मैं ही उसका बदला दूँगा" रोजे के प्रतिबन्ध दो प्रकार के हैं एक का सम्बन्ध पेट तथा योनि से है कि रोजादार खाने पीने से बचे तथा काम इच्छा से अलग रहे यह दोनों बातें रोजेदार के लिए अनिवार्य हैं। दूसरे का सम्बन्ध ज़बान के कुप्रयोग से सम्बन्धित है कि किसी की पीठ पीछे, उसकी बुराई न करे झूठ न बोले, गाली न बके, इन बातों से बचने पर जोर दिया गया है इन बातों से रेजा टूटता तो

शेष पृष्ठ.......38....... पर

तबलीगे नबवी सल्ल० उसके उसूल और उसकी कामयाबी के असबाब

(हुजूर सल्ल० के धर्म प्रसारण के नियम और उनकी सफलता के कारण)

प्रस्तुतिः जमाल अहमद नदवी —अल्लामा सैय्यद सुलैमान नदवी रह0

तबलीगे नबवी सल्ल0 का विस्तार—

पैगामे इलाही सच्चाई का बहता चशमा (स्रोत) है जो धीरे धीरे प्राकृतिक गति से पहले अपने करीब की जमीन को, फिर उससे आगे, फिर उससे आगे को सैराब (सींचना) करता हुआ चला जाता है, यहाँ तक कि वह ज़मीन के तटों तक पहुंच जाता है, आप सल्ल0 को इस धर्म प्रसारण का आदेश क्रमानुसार हुआ, सबसे पहले खास अपने घर और खानदान के लोगों को समझाने का आदेश हुआ कुर्आन में इरशाद है अनुवादः और अपने सबसे नज़दीक (निकट) खानदान वालों को अवगत व होशियार कीजिए। उसके बाद यह सर्किल बढ़ कर शहर मक्का और उसके करीब की आबादियों तक पहुंचता है, दूसरी जगह इरशाद है, अनुवादः ताकि आप सल्ल0 मक्का और उसके आसपास के बसने वाले लोगों को अवगत व होशियार करें, अब धर्म प्रसार का क्षेत्र इससे भी आगे बढ़ता है और हर जीवित प्राण (यानी समझ बूझ, चेतना व बुद्धि एवं प्राकृतिक जीवन के चिन्ह जिसमें मौजूद हों) उसकी संबोधन का केन्द्र बनते हैं अनुवादः यह कुर्आन तो मात्र एक नसीहत और साफ साफ अल्लाह का कलाम है ताकि वह उसको होशियार करे जो जीवित है (सूर—ए—यासीन 36:69—70)। फिर जिस सीमा तक भी वह आवाज़ पहुंच जाये सबसे उसका खिताब है। अनुवादः ताकि मैं तुम्हें अवगत व होशियार करूं और उनको जिन तक मेरी यह आवाज़ पहुंचे (सूर—ए—इन्आम 6:19)। फिर तमाम इन्सानों तक उसका विस्तार होता है अनुवादः यह कुर्आन तमाम इन्सानों के लिए एक पैगाम है (सूर—ए— इब्राहीम 14:52) आप सल्ल0 को खिताब हुआ अनुवादः और हमने आप सल्ल0 को तमाम इंसानों के लिए खुशखबरी सुनाने वाला और होशियार करने वाला बना कर भेजा है (सूर—ए—सबा 34:28) आप सल्ल0 को आदेश हुआ कि तमाम इन्सानों को खिताब करके यह एलान फरमा दें अनुवादः ऐ लोगो! मैं तुम सब की ओर खुदा का संदेश दे कर भेजा गया हूँ (सूर—ए—आराफ 7:158) इससे जियादा यह है कि सारी दुन्या आपके प्रचार व प्रसार के क्षेत्र में सम्मिलित है, फरमायाः अनुवादः बहुत बरकत वाला है वह अल्लाह जिसने अपने बन्दे मुहम्मद सल्ल0 पर हक और बातिल में फर्क बताने वाली किताब नाज़िल की ताकि वह तमाम दुन्या व जहान के लिए होशियार व अवगत करने वाला हो, उसकी मिलकीयत में आसमानों और ज़मीन की बादशाहत है।

(सूर—ए—फुरकान 25: 1,2)

इससे भी जियादा महत्वपूर्ण बात यह है कि इस धर्म प्रचार व प्रसार का विस्तार और उसमें कामयाबी की खुशख़बरी ठीक उसी समय दे दी गयी थी जब मुसलमानों के दिलों में एक प्रकार की मायूसी छाई हुई थी चुनांचि यह आयत उतरी अनुवादः यह कुर्आन तो सारी दुन्या वालों के लिए नसीहत है, और तुम इसकी खबर एक ज़माने के बाद जानोगे (सूर–ए–साद 38:87,88) तमाम अंबियाये किराम और धर्मों के संस्थापकों के अमली नमूनों और मिसालों की तलाश और खोज खबर करो तो यह बात और जियादा खुल कर सामने आयेगी कि इस्लाम के अलावा और जो धर्म तबलीगी (अपने धर्म फैलाने वाले) समझे जाते हैं वह वास्तव में तबलीगी (अपने धर्म को फैलाने वाले) नहीं, स्वयं बौद्ध ने हिन्दुओं के अतिरिक्त किसी को अपनी नजात का मार्ग नहीं बताया और न इसका आदेश दिया, हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने इस्राईल के अतिरिक्त किसी दूसरी कौम को न अपनी नसीहतें सुनाईं, और न उनको अपना मुखातब बनाया और न उनमें से किसी को अपना शिष्य बनाया, न किसी दूसरी कौम में अपने पूरे जीवन में अपना कोई धर्मोपदेशक और धर्म प्रचारक भेजा, हालांकि फिलस्तीन में रूमियों और यूनानियों की बड़ी जमात मौजूद थी आप सल्ल0 ने मक्के में रह कर और करीब के लोगों को जागरूक व सचेत किया, हज के दिनों में अरब के एक एक कबीले के पास जाकर हक की बात पहुंचायी, और उसी काल में यमन और हब्शा तक आप सल्ल0 की आवाज़ पहुंच गयी और लोग सही रास्ते की खोज में आप सल्ल0 के पास आये, आप सल्ल0 के मदीना मुनव्वरा आने के बाद भी सालों कुरैश दूसरे कबीलों तक इस्लाम के पहुंचने की राह में रोड़ा बने रहे, फिर भी धर्म प्रचारकों को भेज कर दूसरे कबीलों तक आवाज़ पहुंचाई गई और आखिर में कुरैश के खिलाफ इसलिए तलवार उठाई गई कि इस्लाम को प्रचार व प्रसार की शान्तिपूर्ण आजादी मिले 6 साले के युद्ध के बाद सुल्हे हुदैबिया में कुरैश ने इस्लाम के इस मांग को सुविकार किया और प्रचार प्रसार की आजादी प्राप्त हुई, कुर्आन ने इस्लाम की इस रूहानी फत्ह (आध्यात्मिक विजय) को खुली विजय करार दिया और सरू–ए–फत्ह 48:1, की आयत उतरी, उसके बाद ही अरब देश और अरब के बाहर देशों में इस्लाम के नुमाइंदे व प्रचारक भेजे गये, और दुन्या के विभिन्न सरदारों व बादशाहों को इस्लाम की दावत के पत्र लिखे गये और अरबों के अतिरिक्त दैलम, ईरान, हबशा, और रोम से इसलाम के चाहने वाले आये और हक को कुबूल करके लाभांवित हुए, मुश्रिकीने अरब, यहूद, ईसाई और पारसी सबने आपके काल ही में आप सल्ल0 के नूर से रौशनी प्राप्त की, लेकिन सिर्फ धर्म प्रसार की फर्जीयत व महत्वता से भी जियादा महत्वपूर्ण चीज़ प्रचार व प्रसार के मूल सिद्धान्त हैं। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः तरावीह की नमाज़ का शरई हुक्म क्या है? कुछ लोग उसे वाजिब कहते हैं तो कुछ सुन्नत कहते हैं अस्ल हुक्म क्या है?

उत्तरः जिस पर नमाज़ फर्ज है उस पर तरावीह की नमाज़ सुन्नते मुअक्कदा है लेकिन यह नमाज जमाअत से पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा अलल किफाया है अर्थात अगर कुछ लोग जमाअत से पढ़ लेंगे और बाकी लोग अपनी अलग पढ़ेंगे तो सब की सुन्नत अदा हो जायेगी अलबत्ता जो लोग मस्जिद में या घर में अकेले तरावीह की नमाज़ पढ़ेंगे उनको जमाअत का सवाब न मिलेगा।

प्रश्नः क्या नाबालिग़ लड़के नमाज़ तरावीह में बालिग़ मर्दों की इमामत कर सकते हैं?

उत्तरः मुफ़्ता बिही कौल (वह फतवा जो मुफ़्तियों के नजदीक मान लिया गया हो) के मुताबिक हनफिया के यहां नाबालिग, बालिगों की इमामत नहीं कर सकता, इसलिए कि नाबालिग पर नमाज़ फर्ज नहीं लिहाजा उसकी हर नमाज़ नफ़्ल होगी और बालिग़ जब सुन्नत नमाज़ शुरु करेगा तो उसका पूरा करना वाजिब हो जायेगा इस तरह नफ़्ल वाला वाजिब वाले की इमामत नहीं कर सकता। मुसन्नफ अब्दुर्रज़्ज़ाक में अब्दुल्लाह बिन अब्बास की रिवायत है कि बच्चा जब तक बालिग न हो जाए (बालिगों की) इमामत नहीं कर सकता। (मुसन्नफ अब्दुर्रज़्ज़ाकः2/398)

प्रश्नः क्या औरतों के लिए भी तरावीह की नमाज़ पढ़ना ज़रूरी है?

उत्तरः औरतों के लिए तरावीह की नमाज़ उसी तरह सुन्नते मुअक्कदा है जिस तरह मर्दों के लिए अलबत्ता उन पर जमाअत से तरावीह पढ़ना सुन्नते मुअक्कदा नहीं है उनके लिए बेहतर है कि वह अपने घरों में अकेले अकेले तरावीह की नमाज़ अदा करें। (फतावा हिन्दीया :1/106)

प्रश्नः अगर किसी शख़्स की तरावीह क़जा हो जाये (छूट जाये) तो किस तरह उसको अदा करे?

उत्तरः अगर कोई तरावीह की नमाज़ जमाअत के साथ नहीं पढ़ सकता तो उसी रात सुबह होने से पहले (सुबह की अजान के वक्त से पहले) तरावीह की नमाज़ अदा करले लेकिन अगर रात गुज़र जाये और सुब्हे सादिक़ हो जाए तो तरावीह की कजा नहीं की जायेगी, न तन्हा और न जमाअत से, अलबत्ता इस कोताही पर तौबा व इस्तिगफ़ार करे।

(फतावा हिन्दीयाः 1/117)

प्रश्नः हाफिजे कुर्आन अपने घर की औरतों (जिनमें महरम और गैर महरम दोनों हों) को तरावीह पढ़ाए तो उसकी इजाज़त है या नहीं?

उत्तरः घर का आदमी अगर हाफिज़े कुर्आन हो और वह घर में तरावीह पढ़ाये और उसके पीछे घर की महरम व गैर महरम औरतें तरावीह पढ़ें तो यह जाइज़ है, अलबत्ता

मुहल्ले और बाहर की औरतों को वहां जमा होने की इजाजत न होगी कि इसमें फित्ने का अन्देशा है।

(अद्दुर्रुल मुख़्तारः 1/529)

प्रश्नः इन्जेक्शन लेने से रोज़ा टूटता है या नहीं?

उत्तरः अगर इन्जेक्शन गोश्त में लें तो उससे रोज़ा नहीं टूटता है क्योंकि दवा गोश्त में हल (मिल जाना) हो जाती है सीधे दिमाग़ या मेदे में नहीं पहुँचती इसलिए रोज़ा नहीं टूटेगा।

(रद्दुल मुहतार : 2/395)

प्रश्नः अगर इन्जेक्शन रग (नस) में लिया जाये या ग्लूकोज चढ़ाया जाये या खून चढ़ाया जाये तो रोजा टूटेगा या नहीं?

उत्तरः इन तीनों सूरतों में इन्जेक्शन की दवा या ग्लूकोज या खून यह तीनों चीज़ें सीधे दिमाग या मेदे में नहीं पहुंचती बल्कि रग के खून में दाखिल होती हैं इसलिए रोज़ा नहीं टूटेगा।

प्रश्नः मिस्वाक करने से रोजे पर कोई असर पड़ता है या नही?

उत्तरः मिस्वाक करने से न तो रोज़ा टूटता है न ही मकरूह होता है बल्कि मिस्वाक करने का सवाब मिलता है चाहे मिस्वाक कड़वी हो मगर याद रहे उसका मज़ा निगला न जाये अलबत्ता दाँतों में पेस्ट करने या मंजन मलने से रोजा मकरूह हो जाता है यानी रोजे के सवाब में कमी आ जाती है।

प्रश्नः आँख, नाक या कान में दवा डालने से रोज़ा टूटता है या नहीं?

उत्तरः आँख में काजल लगायें या सुर्मा या कोई दवा डालें तो न रोज़ा टूटता है न मकरूह होता है लेकिन नाक या कान में दवा डालने या कान में तेल डालने से रोज़ा टूट जाता है अलबत्ता कान में पानी चले जाने से रोज़ा नहीं टूटता।

प्रश्नः रोज़े की हालत में इनहेलर लेने का क्या हुक्म है?

उत्तरः इनहेलर लेने से रोजा टूट जाता है चाहे इनहेलर नाक से खींचा जाये चाहे मुँह से। लेकिन खुशबू सूंघने और फूल आदि सूँघने से रोज़ा नहीं टूटता।

प्रश्नः रोजे की हालत में तम्बाकू के इस्तेमाल का क्या हुक्म है?

उत्तरः तम्बाकू चाहे जिस तरह इस्तेमाल करें रोजा टूट जायेगा चाहे बीड़ी सिगरेट में पियें चाहे हुक्के में पियें चाहे पान में खायें चाहे खैनी होंटों में दबायें रोज़ा टूट जायेगा, इसी तरह जो गुल तम्बाकू से बनाया गया हो उसके इस्तेमाल से भी रोज़ा टूट जायेगा।

प्रश्नः रोज़े की हालत में सादा पान खाने का क्या हुक्म है?

उत्तरः सादा पान या मसाला खाने से रोज़ा टूट जायेगा।

प्रश्नः क्या कै होने से रोज़ा टूट जाता है?

उत्तरः खुद से कै होने से रोज़ा नहीं टूटता चाहे जितनी हो लेकिन अगर अपने इरादे से कै की गई हो तो अगर मुँह भर के है तो रोज़ा टूट जायेगा और अगर जरा सी है तो रोज़ा नहीं टूटेगा। मगर याद रहे कि कै का कोई हिस्सा निगला न जाये अगर निगल लिया तो रोजा टूट जायेगा।

प्रश्नः रोज़े की हालत में हुकना कराने का क्या हुक्म है?

उत्तरः रोज़े की हालत में हुक्ना कराने या पाखाने के मुकाम में कोई दवा या तेल डालने से रोज़ा टूट जाता है।

प्रश्नः खून निकलवाने से रोज़ा टूटता है या नहीं?

उत्तरः खून निकलवाने से रोज़ा नहीं टूटता इसी तरह फोड़े फुंसी या आँख कान नाक के आप्रेशन से रोज़ा नहीं टूटता।

प्रश्नः भूल से खा पी लेने से रोज़ा टूटता है या नहीं?

उत्तरः भूल से खा पी लेने से रोज़ा नहीं टूटता लेकिन यह ज़रूरी है कि किसी के याद दिलाने या खुद के याद आ जाने पर खाने पीने से फौरन रुक जायें।

प्रश्नः इन्डोस्कोपी से रोज़ा टूटता है या नहीं?

उत्तरः इन्डोस्कोपी में पाइप के जरिए मुँह के रास्ते से मेदे में एक मशीन उतारी जाती है उससे अन्दर की जाँच होती है चूंकि मशीन में दवा भी लगी होती है इसलिए रोज़ा टूट जायेगा अगर दवा न लगी हो तो रोजा नहीं टूटेगा।

प्रश्नः रोजे की हालत में इतनी जोर से प्यास लगे कि तबीयत बेचैन हो जाये और बरदाश्त से बाहर हो जाये तो रोजा तोड़ा जा सकता है या नहीं?

उत्तरः ऐसी प्यास जिसमें पानी न पीने से जान को खतरा हो जाये या बरदाश्त से बाहर हो जाये तो रोजा तोड़ देना वाजिब होगा और उस रोजे की सिर्फ कजा करना होगी कफ्फारा नहीं।

(बदाये उस्सनाये:2/99)

प्रश्नः सुगर का ऐसा मरीज जिस को रोजा रखना बहुत दुशवार (कठिन) हो बेहोश हो जाने का खतरा हो ऐसी हालत में उसके लिए रमजान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तरः सुगर का ऐसा मरीज़ रमज़ान के रोज़े न रखे और अगर यह अन्देशा हो कि आगे चल कर भी मरज ठीक न होगा तो छूटे हुए रोजे का फिदया दे-लेकिन अगर बाद में रोजे रखने के लाइक हो गया तो छूटे हुए रोज़ों की कजा करना होगी उस का फिदया सदक़ा हो जाएगा।

(देखिए जामिउर्रुमूज़: 1/16)

नोटः अगर मरीज़ गरीब है फिदया नहीं दे सकता तो अल्लाह तआला उसे मुआफ कर देंगे।

प्रश्नः किसी शख्स ने मक्का मुकर्रमा में रमज़ान गुजारा 30 रोज़े पूरे कर लिए, फिर शाम को हवाई जहाज से लखनऊ आ गया यहां सुब्ह को ईद न थी बल्कि रमजान की 30 तारीख थी ऐसे में उस दिन के रोज़े का उसके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः कुर्आन मजीद में आया है "जिसने रमजान का महीना पाया वह उसमें रोजा रखे" (अलबकरह:185) उस शख्स ने लखनऊ पहुँच कर भी रमजान का महीना पाया इसलिए उस को उस दिन का रोजा रखना चाहिए अगरचि उसने मक्के में 30 रोजे पूरे कर लिए हैं। आयत से यही मालूम होता है वल्लाहु अअ़लम।

प्रश्नः रमज़ान के रोज़े किस पर फर्ज हैं?

उत्तरः हर बालिग मुसलमान मर्द हो या औरत जब कि वह पागल या दीवाना न हो उस पर रमजान के रोजे फर्ज हैं।

प्रश्नः जिस पर रमजान के रोज़े फर्ज हैं अगर उसने रोजे नहीं रखे या किसी सबब से रोजा तोड़ दिया तो उसके लिए क्या हुक्म है?

उत्तरः वह छूटे हुए रोज़ों और किसी सबब से तोड़े हुए रोज़ों की कजा करे।

प्रश्नः कफ़्फ़ारा कब वाजिब होता है?

उत्तरः रमज़ान के रोजे फर्ज हैं वह अगर रमजान के रोजे की हालत में किसी मजबूरी के बिना कुछ खा पी ले चाहे वह दवा हो चाहे नशा हो (तम्बाकू वगैरह) या औरत से सुहबत करे या मर्द से बुरा काम करे इन हालतों में रोज़ा टूट जायेगा और उस टूटे हुए रोजे की कजा भी करना होगी और कफ़्फ़ारा भी अदा करना होगा।

प्रश्नः हैज़ व निफास वाली औरतों (रजस्वला तथा प्रसूता) कि लिए रमजान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तरः हैज़ व निफास वाली औरत न रोजा रख सकती है न नमाज़ पढ़ सकी है, हैज़ व निफास (मासिक धर्म तथा प्रसव) से पाक होने के बाद छूटे हुए रोजे पूरे करेगी और नमाज़ उसको मुआफ हो जायेगी।

प्रश्नः इस्तिहाज़ा वाली औरत के लिए रमजान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तरः इस्तिहाज़ा वाली औरत रोज़े भी रखेगी और नमाज़ें भी पढ़ेगी।

नोटः इस्तिहाज़ा उस ख़ून को कहते हैं जो औरत को हैज व निफास (मासिक धर्म तथा प्रसव) के अलावा बीमारी से आता है)

प्रश्नः दूध पिलाने वाली औरत के लिए रमजान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तरः दूध पिलाने वाली औरत को रोज़े रखने में अगर उसको और उसके बच्चे को तक्लीफ पहुँचे तो वह रमजान के रोज़े न रखे बच्चे का दूध छूटने के बाद छूटे हुए रोज़े पूरे करे।

प्रश्नः मरीज के लिए रमजान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तरः अगर रोज़े रखने से मरीज को तक्लीफ हो या मरज बढ़ जाने का अन्देशा हो तो मरीज रमजान के रोजे न रखे, अच्छा हो जाने पर छूटे हुए रोजे पूरे करे अगर ऐसा मरीज है कि उसके अच्छे होने की उम्मीद न हो तो रोज़ों का फिदया दे यानी हर रोजे के बदले एक किलो छः सौ ग्राम गेहूँ या उसकी कीमत गरीबों को दे लेकिन अगर अच्छा हो कर रोजे रखने के काबिल हो गया तो छूटे हुए रोजे पूरे करे, फिदया सद्क़ा हो जायेगा, जो गरीब फिदया न दे सके उसको अल्लाह मुआफ़ करेगा।

प्रश्नः मुसाफिर के लिए रमजान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तरः मुसाफिर वह है जो 78 कि0मी0 या उससे जियादा दूरी के लिए सफर पर निकले, वह अगर रोजे रख सकता है तो रोजे रखे वह चाहे तो उसको सफर की हालत में रोजे न रखने की इजाजत है बाद में वह अपने छूटे हुए रोजे पूरे करे।

प्रश्नः बूढ़े आदमी के लिए रमजान के रोज़ों का क्या हुक्म है?

उत्तरः बूढ़ा आदमी, मर्द हो या औरत अगर रोज़े रखने मे तक्लीफ हो तो रमज़ान

के रोजे न रखे, मालदार हो तो रोज़ों का फिद्या दे गरीब हो तो अल्लाह मुआफ करेगा।

प्रश्नः रमजान के आखिरी अशरे (दहे) के एअ़तिकाफ का क्या हुक्म है?

उत्तरः रमज़ान के आखिरी अशरे का एतिकाफ़ सुन्नते मुअक्कदा अ़लल–किफाया है यानी अगर मुहल्ले का एक आदमी भी एतिकाफ़ करले तो सबकी तरफ से सुन्नत अदा हो जायेगी लेकिन अगर कोई भी एतिकाफ़ न करे तो सब सुन्नत छोड़ने के गुनहगार होंगे।

(हिदायाः 1/229)

प्रश्नः मुहल्ले में अगर कई मस्जिदें हों तो क्या हर मस्जिद में एतिकाफ़ होना चाहिए?

उत्तरः अगर मुहल्ले में कई मस्जिदें हों तो बेहतर यह है कि हर मस्जिद में एतिकाफ़ हो लेकिन अगर किसी एक मस्जिद में किसी ने एतिकाफ़ कर लिया तो पूरे मुहल्ले के मुसलमानों की तरफ से सुन्नत अदा हो जायेगी।

(रद्दुलमुहतारः 2/495)

प्रश्नः अगर मस्जिद के इहाते में गुस्ल खाना न हो तो क्या मुअ़तकिफ (एतिकाफ़ करने वाला) अपने घर के गुस्ल खाने में नहाने के लिए जा सकता है?

उत्तरः अगर मस्जिद के इहाते में गुस्ल खाना न हो तो वाजिब गुस्ल के लिए या जुमे के गुस्ल के लिए अपने घर के गुस्ल खाने या किसी करीब के गुस्ल खाने में जा सकता है।

प्रश्नः मुअ़तकिफ बीमार हो जाये तो वह इलाज के लिए डॉक्टर के पास जा सकता है या नहीं?

उत्तरः मुअ़तकिफ इलाज के लिए बाहर नहीं जा सकता लेकिन अगर मरज सख़्त है और डॉक्टर मस्जिद में नहीं आ सकता तो इलाज के लिए बाहर जा सकता है लेकिन कुछ घण्टों के लिए, अगर आधे दिन से जियादा बाहर रुक गया तो एतिकाफ़ टूट जायेगा। और उसकी कज़ा करना होगी। (फतावा ता तार खानियाः 2/212)

प्रश्नः मुअ़तकिफ किसी अ़जीज के जनाजे की नमाज़ के लिए बाहर निकल सकता है या नहीं?

उत्तरः मुअ़तकिफ जनाजे की नमाज़ के लिए बाहर नहीं निकल सकता अगर जनाजे की नमाज के लिए बाहर निकलेगा तो एतिकाफ टूट जायेगा और कजा लाजिम होगी।

(फतावा तातार खानियाः 2/412)

प्रश्नः अगर रमजान का एतिकाफ टूट जाये तो उसकी कजा किस तरह करें?

उत्तरः रमजान के आखरी अशरे का एतिकाफ टूट जाये तो उसकी कज़ा के लिए रोजा भी रखना होगा और पूरे दस दिन का एतिकाफ मस्जिद में रखना होगा।

(रद्दुल मुहतारः2/444)

प्रश्नः मुअ़तकिफ वुजू के लिए मस्जिद के बाहर निकल सकता है या नहीं?

उत्तरः मुअ़तकिफ वुजू के लिए मस्जिद से बाहर वुजू खाने में जा सकता है मगर वुजू करके फौरन मस्जिद में वापस आये, उसका एतिकाफ बाकी रहेगा।

प्रश्नः एक शख़्स ने रमजान के आखरी अशरे में एतिकाफ किया मगर बीमारी की वजह से रोज़ा न रख सका, उसके

लिए शरीअत में क्या हुक्म है?

उत्तरः उसका एतिकाफ सुन्नत न रहा मुसतहब हो गया बाद में छूटे रोजे पूरे करेगा और एतिकाफ की कजा न करेगा।

(रद्दुल मुहतार:3/431)

प्रश्नः सद–कए–फित्र किन लोगों पर वाजिब है? और उसकी मिक्दार क्या है?

उत्तरः आकिल व बालिग (बुद्धिमान तथा व्यस्क) मुसलमान जो ईदुल फित्र के दिन अपनी बुन्यादी (मौलिक) ज़रूरतों के अलावा 612 ग्राम चाँदी या उसकी कीमत का मालिक हो उस पर सद–कए– फित्र अपनी और अपने ना बालिग बच्चों की तरफ से अदा करना वाजिब है। (फतावा हिन्दीया:1/191) सद–कए–फित्र की मिक्दार गेहूँ में, अहनाफ के नजदीक आधा साअ़ गेहूँ है जो नई तौल में एक किलो 590 ग्राम बनता है बेहतर है एक किलो 600 ग्राम अदा करें। (देखें जवाहिरुल फिक्ह:1/428) इसमें शक नहीं कि सद–कए–फित्र की मिक्दार में लोगों की अलग अलग तहकीक है जिस का जिस पर इतमीनान हो उसको अपनाये आपस में लड़ें नही।

प्रश्नः सद–कए–फित्र किन लोगों को दिया जायेगा?

उत्तरः सद–कए–फित्र जकात के हकदारों (गरीब मुसलमानों) को दिया जायेगा गैर मुस्लिम को नहीं दिया जा सकता।

(दुर्रुल मुख़्तार:3/325)

प्रश्नः सद–कए–फित्र कब अदा करना चाहिए?

उत्तरः सद–कए–फित्र रमजान ही में अदा कर देना बेहतर है, लेकिन अगर कोई रमजान में अदा न कर सके तो ईद के दिन या उसके बाद अदा करदे।

(बदाये सनाये: 2/199)

प्रश्नः जो लोग बीमारी या किसी और उज्र के सबब रोजा नहीं रख सके तो क्या उन पर भी सद–कए–फित्र वाजिब है?

उत्तरः अगर वह साहिबे निसाब (मालदार) हैं तो उन पर सद–कए–फित्र वाजिब है चाहे उन्होंने रोजा न रखा हो।

(देखिए रद्दुल मुहतार: 2/74)

प्रश्नः क्या बीवी का सद–कए–फित्र उसके शौहर पर वाजिब है?

उत्तरः बीवी अगर साहबे निसाब है तो जिस तरह उस पर अपने माल की जकात अदा करना फर्ज है उसी तरह अपना सद–कए–फित्र वह खुद अदा करेगी अलबत्ता अगर शौहर उसकी तरफ से अदा कर देगा तो अदा हो जायेगा।

(अलमुगनी: 2/59, 60)

प्रश्नः क्या औरतें एतिकाफ कर सकती हैं?

उत्तरः औरतें एतिकाफ कर सकती हैं लेकिन उनके एतिकाफ के लिए शौहर की इजाजत ज़रूरी होगी फिर वह मस्जिद के बजाये अपने घर के किसी एक तरफ जहाँ नमाज पढ़ती हों एतिकाफ करेंगी।

(देखें फतावा हिन्दीया: 1/211)

प्रश्नः ईदुल फित्र की नमाज की शरई हैसियत क्या है, यह वाजिब है या सुन्नत?

उत्तरः ईदुल फित्र की नमाज वाजिब है और यह हर आकिल बालिग (बुद्धिमान व्यस्था) मुसलमानों मर्द जो बीमार न हों नाबीना न हो सफर में न हो उस पर वाजिब है औरतों पर वाजिब नहीं है। (हिदाया: 1/172)

प्रश्नः ईदुल फित्र की नमाज

ईदगाह में पढ़ना बेहतर है या मस्जिद में?

उत्तरः ईदुल फित्र की नमाज ईदगाह में पढ़ना अफजल है इसलिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ईदैन की नमाज हमेशा ईदगाह में पढ़ी। हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ईदुल फित्र और ईदुल अज़्हा के दिन ईदगाह तशरीफ ले जाते, सबसे पहले नमाज पढ़ाते, उसके बाद लोगों की तरफ मुखातब हो कर खुत्बा देते और लोग सफों में बैठे खुतबा सुनते रहते थे। (बुखारीः 1/131)

प्रश्नः ईदुल फित्र के दिन नमाज से पहले कुछ खाने का क्या हुक्म है?

उत्तरः ईदुल फित्र के दिन नमाज़ से पहले खजूर या कोई मीठी चीज खाना सुन्नत है। ईदुल फित्र के दिन नबीए करीम सल्ल0 ईदगाह जाने से पहले कुछ मीठा खा लेते थे। (बुखारीः 1/130)

प्रश्नः अगर किसी की ईद की नमाज़ छूट जाये तो उसकी कजा करेगा या नहीं?

उत्तरः ईदैन की नमाज़ों की कजा नही है अलबत्ता अगर अपनी ईदगाह में नमाज हो गई हो और दूसरी ईदगाह में नमाज मिल सके तो वहां जाकर अदा कर ले।

(दुर्रुल मुख़्तारः 1/561)

प्रश्नः कुछ लोग ईदगाह नमाज के ख़त्म पर पहुंचे उनकी नमाज़ छूट गई, उन लोगों ने वहीं दूसरी जमाअत करके ईद की नमाज़ पढ़ ली, उनकी नमाज़ हुई या नहीं?

उत्तरः उनको चाहिए था कि कहीं और जहां नमाज़ मिल सकती वहां जा कर नमाज़ अदा करते लेकिन अगर वहीं पढ़ ली तो नमाज़ तो हो गई मगर ऐसा करना मकरूह है। (रद्दुलमुहतारः 1/783)

प्रश्नः हनफी शख़्स अगर शाफई या हंबली इमाम के पीछे ईदैन की नमाज़ पढ़े तो उन के मुताबिक जाइद तक्बीरें कहे या नहीं?

उत्तरः हनफी शख्स अगर हंबली या शाफई व गैरह इमाम के पीछे ईद की नमाज़ अदा करें तो इमाम की पैरवी करे और उनके मुताबिक जाइद तक्बीरें कहे।

(रद्दुल मुहतारः1/708)

प्रश्नः जकात किन लोगों पर फर्ज है?

उत्तरः हर आकिल बालिग मुसलमान मर्द हो या औरत जो 612 ग्राम (दो सौ दिरहम पुरातम अरबी तौल तथा मुद्रा) चांदी या उसकी कीमत का मालिक हो उसको साहिबे निसाब कहते हैं उस पर जकात फर्ज है अलबत्ता जब उसके माल पर साल गुज़र जायेगा तब जकात देना होगी। बेहतर यह है कि रमजान का महीना जकात के हिसाब के लिए मुकर्रर करे और रमजान ही में जकात अदा करदे।

प्रश्नः जकात किस हिसाब से निकाली जाती है?

उत्तरः जकात ढाई फीसद निकाली जाती है।

प्रश्नः जकात किसको दी जाये?

उत्तरः हर वह गरीब मुसलमान जो साहिबे निसाब न हो वह जकात का हकदार है अलबत्ता अपने माँ बाप दादा दादी नाना नानी और औलाद पोते, पोती, नवासी नवासों

को जकात नहीं दे सकते इसी तरह सैय्यद को भी जकात नहीं दे सकते। गरीब भाई बहन चचा फूफी आदि को जकात दे सकते हैं। गैर मुस्लिम को जकात नहीं दे सकते हैं।

प्रश्नः जेवरात और कारोबारी सामान पर जकात कैसे निकाले?

उत्तरः जेवरात और कारो बारी सामान की कीमत लगा लें और कुल कीमत से ढाई फीसद निकाल कर हकदारों को पहुँचायें बेहतर यही है कि हर रमजान में जकात अदा करें। ❑❑

इख़्लास और......

बुरी थी तो पकड़ा जायेगा, जो कुछ मिलना था वह भी नहीं मिलेगा, इसलिए हमारे तमाम बड़े उलमा हैं वह इसी बात का ख़्याल रखते हैं कि अन्दर का मुआमला दुरुस्त रहे, हर समय इसी की फिक्र में लगे रहते हैं इसी प्रकार सबको करना चाहिए, अल्लाह तआला हमारी नीयतों को दुरुस्त फरमाये और इख़्लास अता फरमाये।

❖❖❖

क़ुर्आन की शिक्षा............

महीने में तरावीह मुकर्रर हुई पस क़ुर्आन की खिदमत इसी महीने में खूब एहतियात से करनी चाहिए कि इसी वास्ते मुकर्रर और मुअय्यन हुआ है।

4. यानी इस मुबारक महीने के अज़ीम व मखसूस फजाइल तुम को मालूम हो चुके तो अब जिस किसी को यह महीना मिले उसको रोजा ज़रूर रखना चाहिए।

5. इस आयत से पहले वाली आयत से यह समझ में आता था कि शायद मरीज और मुसाफिर को भी इफ़्तार और कज़ा की इजाज़त बाकी नहीं रही और जैसे रोजे की ताकत रखने वालों को अब इफ़्तार की मुमानियत कर दी गयी ऐसे ही मुसाफिर और मरीज़ को भी मनाही हो गयी हो इसलिए मरीज और मुसाफिर के बारे में फिर साफ फरमा दिया कि उनको रमज़ान में इफ़्तार करने और दूसरे दिनों में उसके क़जा कर देने की इजाज़त उसी प्रकार बाकी है जैसे थी।

6. मतलब यह है कि अल्लाह तआला ने पहले रमज़ान में रोजे का हुक्म फरमाया और मजबूरी की वजह से फिर बीमार और मुसाफिर को इफ़्तार करने की इजाज़त दी और दूसरे वकतों में उन दिनों की गिनती के बराबर रोज़ों का कज़ा करना तुम पर फिर वाजिब फरमाया, एक साथ होने या अलग अलग होने की जरूरत नहीं तो इसमें इसका ख़्याल है कि तुम पर आसानी रहे दुश्वारी न हो, और यह भी मनजूर है कि तुम अपने रोज़ों की गिन्ती पूरी कर लिया करो सवाब में कमी न आ जाये, और इसका भी ख़्याल है कि तुम इस तरीक़े से सरासर खैर की हिदायत पर अपने अल्लाह की बड़ाई बयान करो और उसको बुजुर्गी से याद करो और यह भी चाहा जा रहा है कि इन नेअ़मतों पर तुम शुक्र करो और शुक्र करने वालों की जमात में दाखिल हो जाओ, सुब्हानल्लाह रोजा जैसी मुफीद इबादत हम पर वाजिब फरमाई और परेशानी और तकलीफ की हालत में आसानी भी फरमा दी और खाली औकात में उस नुक़सान के पूरा करने का तरीक़ा भी बतला दिया। ❑❑

जान हाजिर है हरम की पासबानी के लिए

हज का मौसम आ गया उक़्बा बनाने के लिए
मुस्तइद हैं फर्ज वाले हज पे जाने के लिए

या खुदा आसान करदे उम्रा उनका और हज्ज
जो इरादा कर चुके हैं हज पे जाने के लिए

हर तरफ है खूँ, खराबा पर हरम महफ़ूज़ है
रब का है वाँ पर करम यह हज्ज वालों के लिए

या खुदा नाकाम करदे फितना वालों की सई
मुँह की खांए वां जो आएँ फितना लाने के लिए

न हरम देखे, यज़ीदी जुल्म अब या रब वहाँ(1)
धूल चाटे वां जो आए जुल्म ढ़ाने के लिए

या खुदा हज्जाज जैसा जुल्म ना देखे हरम(2)
जुल्म वां था एक सहाबी को मिटाने के लिए

क़रामिता के दौर सा फितना न हो या रब वहाँ(3)
है नहीं ताकत यहाँ, वह गम उठाने के लिए

साल उन्नासी सा फितना अब वहाँ या रब न हो(4)
झूठा महदी था उठा इस्लाह लाने के लिए

तौबा कोताही पे अपनी तौबा यारब सद हजार
जान हाजिर है हरम की पासबानी के लिए

फिर दुआ है या खुदा हरमैन में फित्ना न हो
अम्न पाए वां जो आए अम्न पाने के लिए

या खुदा सुन ले दुआ तू है समीउ़ तू अलीम
भेज रहमत तू नबी पर या समीउ़ या अलीम

बख्श दे मेरी खताएँ, हैं खताएँ बे शुमार
तौबा सुन ले मेरी या रब तू है तव्वाबो रहीम

पद्य में संकेतक घटनाओं की व्याख्या

1. यजीद का शासन काल 60 हि0 से 64 हि0 (680 ई0 से 684 ई0) तक रहा उसके काल में 61 हि0 में करबला में हज़रत हुसैन रज़ि0 को उनके 72 साथियों के साथ शहीद कर दिया गया। यह बड़ी ही दुखद घटना थी।

उसके काल में दूसरी बड़ी दुखद घटना सन् 64 हि0 में मदीने में घटी जो इतिहास में हर्रा घटना के नाम से जानी जाती है यह घटना मदीने की बग़ावत (विद्रोह) दबाने में घटी। इसमें अत्याचार की सारी सीमाएं पार हो गई तीन दिन तक मदीने में नरसंहार होता रहा यद्यपि हज़रत जैनुलआबिदीन, मुहम्मद बिन हनफीया और उनके कुल के लोग तथा अब्दुल्लाह बिन अब्बास और अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 ने इस बगावत में भाग नहीं लिया था न उनको कोई हानि पहुँची थी।

तीसरी दुर्घटना यजीदी काल में 64 हि0 मे मक्के में घटी हरमे मक्की में यजीद के विरोधी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि0 विद्यमान थे उनको पराजित करने हेतु यजीदी सेना ने हरम में गोला बारी करके हरम का अपमान किया उसी बीच दमिश्क से यजीद के मरने की सूचना आ गई और लड़ाई रुक गई।

2. उमवी शासन पतन के कगार पर पहुँच चुका था, अब्दुल्लाह बिन जुबैर का अधिकांश इस्लामी क्षेत्रों पर अधिकार था कि मरवान ने उमवी शासन को पुनः संभाला दिया, उसके पश्चात उसके बेटे अब्दुल मलिक का काल आया उसने एक दृढ़ सेना के साथ अपने सेना पति हज्जाज को अब्दुल्लाह बिन जुबैर को प्राजित करने के लिए सन् 71 हि0 690 ई0 में मक्के भेजा, दो वर्षो से अधिक लड़ाई चलती रही अन्ततः हरमे मक्की में अब्दुल्लाह बिन जुबैर रज़ि0 को सन् 74 हि0 693 ई0 में शहीद करके उनका शासन समाप्त कर दिया गया।

3. करामता बातिनीयों का एक समुदाय है इनके विचार तथा विश्वास किताब व सुन्नत से मेल नहीं खाते यह उम्मत के लिए बड़े खतरनाक हैं यह कूफा के निकट खोजिस्तान से उठे थे और फिर दमिश्क शासन के निर्बल हो जाने से इतने शक्तिशाली हो गये कि इनके एक दल ने 319 हि0 931 ई0 में हरमे मक्की पर आक्रमण करके सैकड़ों हाजियों को शहीद कर दिया और हजरे अस्वद उखाड़ ले गये जो बड़ी कोशिशों से 22 वर्षों के पश्चात वापस मिला था।

4. सन् 1979 ई0 (मुहर्रम 1400 हि0) में एक जमाअत हरमे मक्की में घुसी उस समय ज़मज़म का निर्माण हो रहा था निर्माण सामग्री ले जाने के लिए हरम के अन्दर जाने का रास्ता था उसी रास्ते से उक्त जमाअत का आवश्यक सामान भरा ट्रक भी प्रवेश कर गया उस जमाअत ने हरम के द्वार बन्द कर दिये हाजी बड़े भयभीत हुए जमाअत के एक व्यक्ति ने महदी होने का एलान किया। शासन हरकत में आया बड़ी कठिनाइयों से

हाजियों को मुक्ति कराया जमाअत वाले हथियारों के साथ थे मुकाबला शुरु हो गया। दो सप्ताह की लड़ाई के पश्चात सब पकड़े गये उसमें कुछ औरतें भी थीं और बच्चे भी दारुल इफ़्ता से फत्वा लेकर शासन ने औरतों और बच्चों को छोड़ कर सबको क़त्ल कर दिया।

इसमें संदेह नहीं कि वह सबके सब दीनदार थे उनकी माँगें भी उचित थीं परन्तु उनसे दो बड़ी गलतियां हुई। ० उन्होंने हरम से अपना आन्दोलन चला कर हरम का अपमान किया, हाजियों को भयमीत किया, दो सप्ताह तक काबे के तवाफ में रुकावट बने। ० हदीस में जो महदी के आने का उल्लेख है उन्होंने खुद को महदी बता कर झूठा दावा किया।

❖❖❖

निअ़मत व बरकत.............

नहीं है परन्तु सवाब में कमी आ जाती है। हदीस शरीफ में आया है कि "अगर रोजेदार किसी की पीठ पीछे उसकी बुराई करना दूसरों की बुराई ढूँढना, झूठ बोलना नहीं छोड़ता तो उसको अकारण अपने को भूखा प्यासा रखने की क्या आवश्यकता है" यानी उसके ऐसे रोजे से क्या लाभ उसका तो रोजा पूरा हो जायेगा उसको रोजा छोड़ने की सजा न मिलेगी परन्तु रोज़े के जो अनगिनत लाभ हैं उनसे वंचित रहेगा।

रोजा रखने से रोजादार ने नर्मी (लीनता) सहानुभूति तथा दासत्व ईश भक्ति की भावना उत्पन्न हो जाती है उसके अन्दर दूसरों की संवेदना की ओर झुकाव पैदा हो जाता है भले कामों की ओर झुकाव बढ़ जाता है तथा वह बुराईयों से घृणा करने लगता है उसको भलाई की ओर बुलाया जाये तो वह तुरन्त उसको स्वीकार कर लेता है बुराई से रोका जाये तो उससे बड़ी सरलता से रुक जाता है इस प्रकार रोजा उसकी आखिरत की सफलता की राह बनाता है और उसको अल्लाह तआला की मर्जी और उसकी प्रसन्नता की ओर बढ़ाता है और भलाई की ओर बढ़ने की उस पुकार का उत्तर देता है जो फरिश्ते की ओर से लगाई जाती है कि "ऐ भलाई चाहने वालो आगे बढ़ो (अर्थात भले काम करो) और ऐ बुराई करने वालो, पीछे हटो (अर्थात बुराई करने से रुक जाओ)" हदीस शरीफ के अनुसार यह आवाज़ एक फरिश्ते द्वारा सुब्ह व शाम लगाई जाती है चुनांचि रमज़ान आरम्भ होते ही यह आवाज़ हर ओर गूँजने लगती है।

लैलतुल क़द्र में रोजेदारों को यह दुआ सीखाई गई है "अल्लाहुम्म इन्नका अ़फुव्वुन तुहिब्बुल अ़फ्व फ़अ़फु अ़न्नी" अनुवादः ऐ अल्लाह आप बहुत मुआफ करने वाले हैं आप मुआफ करने को पसन्द करते हैं अतः मुझ को मुआफ कर दीजिए।

नोटः हिन्दी में लिखे अरबी शब्दों में जिस अक्षर के नीचे हलन्त न हो उसको गतिशील अर्थात पृथक अक्षर की भाँति पढ़ें जैसे म,क,व आदि।

❖❖❖

उर्दू सीखिए

—इदारा

अक्षर को उर्दू में ह़र्फ़ कहते हैं और बिन्दी को उर्दू में नुक़्ता कहते हैं।

उर्दू ह़र्फ़ों का तआ़रुफ़ (परिचय)

उर्दू अक्षर	प्रचलित नाम	ध्वनि	उर्दू अक्षर	प्रचलित नाम	ध्वनि
ا	अलिफ़	अ	ز	ज़े	ज़
ب	बे	ब	س	सीन	स
پ	पे	प	ش	शीन	श
ت	ते	त	ص	स्वाद	स
ٹ	टे	ट	ض	ज़्वाद	ज़
ث	से	स	ط	तो	त
ج	जीम	ज	ظ	ज़ू	ज़
چ	चे	च	ع	ऐन	अ़
ح	ह़े	ह़	غ	ग़ैन	ग़
خ	ख़े	ख़	ف	फ़े	फ़
د	दाल	द	ق	क़ाफ़	क़
ذ	ज़ाल	ज़	ک	काफ	क
ر	रे	र	گ	गाफ़	ग
ڑ	ड़े	ड़	ل	लाम	ल

जारी............

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

मिस्र में 683 को सजा-ए-मौत—

मिस्र की एक अदालत ने 683 लोगों को मौत की सजा सुनाई है। मेन्या की एक अदालत ने मुस्लिम ब्रदरहुड की शीर्ष मार्गदर्शक को उनके 682 समर्थकों के साथ यह सजा सुनाई। अगर बादेई को मिली सजा की पुष्टि हो जाती है, तो मौत की सजा पाने वाले वह ब्रहरहुड के सर्वोच्च नेता होंगे।

मौत की सजा पाए यह सभी लोग मिस्र के पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद मोरसी के समर्थक हैं और मुस्लिम ब्रदरहुड से तअल्लुक रखते हैं। यह लोग गिरफ्तार किए गए 1,200 मोरसी समर्थकों में से हैं। बचाव पक्ष के वकीलों ने अदालत की आखिरी सुनवाई का बहिष्कार किया।

कोर्ट के बाहर इंतजार कर रही कई महिलाएं फैसले के बाद बोहोश हो गईं। इन लोगों को सजा सुनाने के बाद विशेषज्ञों को मोरसी को अपदस्थ किए जाने के बाद से अस्थिरता की चपेट में आए देश में ताजा तनाव पैदा होने की आशंका है।

पाँच साल में पूरी निधि भी खर्च नहीं कर पाए सांसद–

यूपी के सांसदों की दूसरे कामों में व्यस्तता शायद इतनी ज़्यादा है कि उन्हें अपनी सांसद निधि का पूरा पैसा खर्च करने का भी वक्त नहीं मिल रहा है। 15वीं लोकसभा में साल 2009 से इस साल 15 जनवरी तक इन सांसदों को 1,520 करोड़ रूपए मिले थे। इसमें जितना पैसा जारी हुआ उसका केवल 75.43 प्रतिशत पैसा ही खर्च हुआ। सभी सांसदों को अभी कुल 344.26 करोड़ रूपए खर्च करना है।

सांसदों की सुस्ती और लापरवाही के कारण ही यूपी में पिछले दो दशकों में सांसद निधि के चार अरब से ज्यादा रूपए खर्च नहीं हो पाए। चूंकि अगली लोकसभा के लिए चुनाव है। ऐसे में अगर मौजूदा सांसद दोबारा जीत नहीं पाए तो उनहें पैसा वक्त से खर्च न कर पाने का मलाल जरूर रहेगा। सांसद निधि का पैसा साल 2012 में दो करोड़ से बढ़ाकर पांच करोड़ कर दिया गया तब ही इसके समय से खर्च को लेकर सवाल उठने लगे थे।

स्थानीय क्षेत्र विकास निधि यानी सांसद निधि में यूपी के सांसदों को वर्ष 1993 से लेकर अब तक 4570 करोड़ रूपए मिल चुके हैं। लेकिन इतने वक्त में भी 629. 84 करोड़ रूपए खर्च होने से रह गए। जितना पैसा जारी हुआ उसका 88.36 प्रतिशत ही खर्च हुआ।

० हर सांसद 19 करोड़ रूपए खर्च करने का अधिकृत है

० नौ सांसद ऐसे हैं जो अभी तक तीन छमाही किस्तें भी जारी नही करवा पाए। □□